₹ १००/- वार्षिक

दिव्य जीवन

सारे दृश्य पदार्थ माया हैं। आत्मा के ध्यान या ज्ञान के द्वारा माया का तिरोधान हो जायेगा। माया से मुक्त होने के लिए मनुष्य को परिश्रम करना चाहिए। माया मन के द्वारा बड़ा अनिष्ट करती है। मन का नाश करने से माया का नाश होता है। माया को जीतने के लिए केवल निदिध्यासन ही एक उपाय है। भगवान् बुद्ध, राजा भर्तृहरि, दत्तात्रेय, गुजरात के सन्त अखौ—इन सबने गम्भीर ध्यान के द्वारा ही मन और माया को जीत लिया था। शान्ति में प्रवेश करें। ध्यान करें। आत्म-साक्षात्कार के लिए एकान्तवास और गहन ध्यान ये दोनों परम आवश्यक हैं।

स्वामी शिवानन्द

फरवरी २०२२

आध्यात्मिक पंचांग २०२२–२०२३

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर—२४९ १९२,

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, हिमालय, भारत

२०२२

अप्रैल

१	शुक्र	अमावास्या
२	शनि	युगादि; चान्द्र नव-वर्ष दिवस; वसन्त नवरात्र प्रारम्भ
१०	रवि	श्री रामनवमी
१२	मङ्गल	एकादशी
१४	बृहस्पति	मेष संक्रान्ति (१०.५३ पूर्वाह्न); प्रदोष पूजा; श्री महावीर जयन्ती
१६	शनि	पूर्णिमा; श्री हनुमान् जयन्ती
२६	मङ्गल	एकादशी; श्री वल्लभाचार्य जयन्ती
२८	बृहस्पति	प्रदोष पूजा
३०	शनि	अमावास्या

मई

३	मङ्गल	अक्षय तृतीया; श्री परशुराम जयन्ती
६	शुक्र	श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती
७	शनि	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती; श्री गंगा सप्तमी
१२	बृहस्पति	एकादशी
१३	शुक्र	प्रदोष पूजा
१४	शनि	श्री नृसिंह जयन्ती
१५/१६	रवि/सोम	पूर्णिमा
१६	सोम	पूर्णिमा; श्री बुद्ध जयन्ती
२६	बृहस्पति	एकादशी
२७	शुक्र	प्रदोष पूजा
३०	सोम	सोमवती अमावास्या

जून

१	बुध	परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की संन्यास-दीक्षा जयन्ती
९	बृहस्पति	श्री गंगा दशहरा
१०	शुक्र	एकादशी (निर्जला)
१२	रवि	प्रदोष पूजा
१४	मङ्गल	पूर्णिमा
२४	शुक्र	एकादशी
२६	रवि	प्रदोष पूजा
२८/२९	मङ्गल/बुध	अमावास्या

जुलाई

१०	रवि	हरिशयनी एकादशी
११	सोम	चातुर्मास्य व्रत प्रारम्भ; प्रदोष पूजा
१३	बुध	श्री गुरु पूर्णिमा; श्री व्यास पूजा; श्री गुरु पूजा
२२	शुक्र	परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ५९ वाँ पुण्य-तिथि आराधना दिवस
२४	रवि	एकादशी
२५	सोम	प्रदोष पूजा
२८	बृहस्पति	अमावास्या

अगस्त

२	मङ्गल	नाग पंचमी
४	बृहस्पति	श्री तुलसीदास जयन्ती
८	सोम	एकादशी
९	मङ्गल	प्रदोष पूजा
११	बृहस्पति	पूर्णिमा; रक्षाबन्धन
१२	शुक्र	पूर्णिमा
१५	सोम	स्वतन्त्रता दिवस
१९	शुक्र	श्री कृष्ण जयन्ती
२३	मङ्गल	एकादशी
२४	बुध	प्रदोष पूजा
२५	बृहस्पति	परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का चौदहवाँ पुण्य-तिथि आराधना दिवस
२६/२७	शुक्र/शनि	अमावास्या
३१	बुध	श्री गणेश चतुर्थी

सितम्बर

१	बृहस्पति	ऋषि पंचमी
६	मङ्गल	एकादशी
७	बुध	श्री वामन जयन्ती
८	बृहस्पति	परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १३५ वीं जन्म-जयन्ती; प्रदोष पूजा
९	शुक्र	श्री अनन्त चतुर्दशी
९/१०	शुक्र/शनि	पूर्णिमा
१०	शनि	पूर्णिमा; महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ

(शेष आवरणपृष्ठ ३ पर)

दिव्य जीवन

Vol. XXXII	फरवरी २०२२	No. 11

प्रश्नोपनिषद्

द्वितीयः प्रश्नः

तस्मै स होवाच। आकाशो ह वा एष देवो वायुरग्निरापः

पृथिवी वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च।

ते प्रकाश्याभिवदन्ति वयमेतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः ।।२।।

उससे (भार्गव से) पिप्पलाद मुनि ने कहा, वे देव हैं—आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, वाक्, मन, चक्षु एवं श्रोत्र। वे सब अपनी-अपनी महिमा को प्रकट करते हुए कहते हैं, 'हम ही इस शरीर को आश्रय देकर इसे धारण करते हैं।'

करुणानिधिः

(शिखरिणीसप्तकम्)

ज्ञानभास्कर महामहोपाध्याय श्री एस. गोपाल शास्त्री

महामेधा मान्यो महितगुणवारांनिधिरसौ
महामोहध्वंसी मदरहितचित्तो मधुरवाक्।
महिष्ठं सद्धर्मं मतिरहितलोकोद्धृतिपरम्
महानातन्वानो विलसति हिमानीशिखरिणि ।।७।।

जो महामेधावी हैं, सर्व-सम्माननीय हैं, दिव्य सद्गुणों के सागर हैं, महामोह के नाशकर्ता हैं, जिनका चित्त मद एवं अहंकार से रहित है, जो सदैव मधुर वचन बोलते हैं तथा जो अज्ञान-निद्रा में सोयी मानवता के उत्थान हेतु महिमामय धर्म के प्रचार-प्रसार में निरन्तर संलग्न हैं, ऐसे श्री गुरुदेव हिमाच्छादित पर्वत पर अत्यन्त उज्ज्वल रूप में विभासित होते हैं।

शिखरिणीदृशसद्गुरुकेसरी मदमुखेभगणानतिभीषयन्।
सपदि गर्जति ''भक्तिशमान्विताः भवत रे मनुजाः सुखभागिनः'' ।।८।।

पवित्र हिमालय से श्री गुरुदेव, एक सिंह के समान दर्प-मद आदि दुर्गुणों रूपी गजसमूह को भयभीत करते हुए यह गर्जना करते हैं, 'हे मानववृन्द! भगवद्भक्त बनें, मन पर नियन्त्रण करें तथा इस प्रकार शाश्वत आनन्द प्राप्त करें।'

(समाप्त)

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

भगवान् शिव की दिव्य महिमा

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

भगवान् शिव के पावन चरणकमलों में श्रद्धाभक्तिपूर्वक प्रणाम, जो जगत्पति, जगद्गुरु एवं त्रिपुरसंहारक (अहंकार-काम-क्रोध-संहारक) हैं, उमाशंकर, गौरीशंकर एवं गंगाशंकर हैं, ज्योतिर्मय एवं चिदानन्दमय हैं, योगेश्वर एवं ज्ञाननिधि के भण्डार हैं तथा जो महादेव, शंकर, हर, शम्भु, सदाशिव, रुद्र, शूलपाणि, भैरव, उमामहेश्वर, नीलकण्ठ, त्रिलोचन, त्र्यम्बक, विश्वनाथ, चन्द्रशेखर, अर्द्धनारीश्वर, महेश्वर, नीललोहित, परमशिव, दिगम्बर, दक्षिणामूर्ति आदि नामों से जाने जाते हैं।

भगवान् शिव कितने दयालु हैं! वे कितने स्नेहशील एवं करुणाशील हैं! वे अपने भक्तों के कपालों को भी अपने कण्ठ में माला के रूप में (मुण्डमाला) धारण करते हैं। वे त्याग, करुणा, प्रेम एवं ज्ञान के साकार विग्रह हैं। यह कहना अनुचित है कि वे संहारक हैं। वास्तव में, भगवान् शिव नवजीवनदाता हैं। जब मनुष्य का शरीर रोग, वृद्धावस्था अथवा अन्य किसी कारण से जीवन-पथ पर विकास करने में अक्षम-असमर्थ हो जाता है, तब वे शीघ्र ही उसके जर्जर शरीर को नष्ट करके, उसे एक नवीन, स्वस्थ एवं सबल शरीर प्रदान करते हैं जिससे वह त्वरित विकास कर सके। भगवान् शिव अपनी सभी सन्तानों को शीघ्रातिशीघ्र अपने चरण-कमलों में लाना चाहते हैं। वे उन्हें अपना दिव्य 'शिव-पद' प्रदान करना चाहते हैं। भगवान् विष्णु की अपेक्षा भगवान् शिव को प्रसन्न करना अत्यन्त सरल है। उनके प्रति थोड़ा प्रेम एवं भक्ति, उनके पंचाक्षरी मन्त्र का थोड़ा जप ही उन्हें प्रसन्न करने हेतु पर्याप्त है। वे शीघ्र ही प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनोवांछित वर देते हैं। उनका हृदय कितना विशाल है! उन्होंने अर्जुन की अल्पकालिक तपस्या से प्रसन्न होकर उसे अपना पाशुपतास्त्र दे दिया। उन्होंने भस्मासुर को अद्भुत वर प्रदान किया।

तिरुपति के समीप कालहस्ती में, उन्होंने अपने एक भक्त कण्णप्प नयनार को दर्शन दिये जो एक शिकारी था तथा भगवान् शिव की मूर्ति के नेत्रों में अश्रु देखकर उनके स्थान पर अपने नेत्र निकालकर लगाने को तत्पर हो गया था। चिदम्बरम में, अस्पृश्य जाति के एक सन्त नन्द को भी भगवान् शिव के दर्शन प्राप्त हुए। यम-देवता के पाश में आबद्ध भक्त मार्कण्डेय की रक्षा हेतु, उसे अमरत्व प्रदान करने हेतु भगवान् शिव अत्यन्त तीव्र गति से उसके समीप पहुँचे थे। रावण ने सामवेद के गान से ही उन्हें शीघ्र प्रसन्न कर लिया था। भगवान् शिव ने दक्षिणामूर्ति स्वरूप धारण कर चार कुमारों—सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनत्कुमार को परम तत्त्व का ज्ञान प्रदान किया। दक्षिण भारत के मदुरै जिले में जब वैगाइ नदी पर बाँध बनाया जा रहा था, तब सुन्दरेश्वर (भगवान् शिव) ने एक बालक का रूप धारण किया तथा एक भक्तिमती वृद्धा स्त्री की सहायता के लिए अपने सिर पर मिट्टी उठाकर निर्माण-स्थल तक पहुँचायी तथा उससे मजदूरी-स्वरूप पुत्तु (एक प्रकार की मिठाई) लिया। अपने भक्तों के प्रति उनकी असीम करुणा को देखिए।

'द डिवाइन लाइफ' १९७३ से उद्धृत आलेख का अनुवाद
(इस वर्ष महाशिवरात्रि पर्व १ मार्च २०२२ को है)

जब भगवान् विष्णु एवं ब्रह्मा जी, भगवान् शिव के मस्तक एवं चरणों की खोज हेतु अर्थात् उनके स्वरूप के विस्तार का आकलन करने हेतु प्रयास कर रहे थे, तब उन्होंने एक अनन्त ज्योति का रूप धारण कर लिया। इस कारण, वे दोनों अपने प्रयास में असफल सिद्ध हुए। भगवान् शिव अत्यन्त महिमामय एवं स्वयं-प्रकाशमान सत्ता हैं।

वे दक्षिण भारत में पत्तिनात्तु स्वामी के घर अनेक वर्षों तक, उनके दत्तक पुत्र के रूप में रहे तथा उनके लिए एक संक्षिप्त सन्देश लिखकर वहाँ से अदृश्य हो गये। वह सन्देश था—''मृत्यु के पश्चात्, टूटी नोक वाली सुइयाँ भी तुम्हारे साथ नहीं जायेंगी।'' इस सन्देश को पढ़ते ही, पत्तिनात्तु स्वामी की परम तत्त्व की खोज प्रारम्भ हो गयी। भगवान् शिव के साक्षात्कार हेतु, आप सब इसी क्षण से गम्भीरतापूर्वक प्रयास क्यों नहीं करते हैं?

भगवान् शिव यतीश्वर हैं, वे योगीश्वर हैं। उनके दायें हाथ में सुशोभित त्रिशूल त्रिगुणों—सत्त्व, रज एवं तम—का प्रतीक है। वे इन गुणों द्वारा जगत् पर शासन करते हैं। उनके बायें हाथ में शोभित होता डमरू 'शब्द-ब्रह्म' का प्रतीक है। यह प्रणव-ध्वनि स्वरूप है जिससे समस्त भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। भगवान् शिव ने ही अपने डमरू की ध्वनि से संस्कृत भाषा का सृजन किया। प्रणव अथवा '**ॐ**' , भगवान् शिव के बाह्य स्वरूप (चावल के ऊपर की भूसी के समान) को तथा पंचाक्षरी मन्त्र उनके आन्तरिक स्वरूप (चावल की भाँति) को निरूपित करता है। प्रणव एवं पंचाक्षरी मन्त्र एक ही हैं। '**नमः शिवाय**' के पाँच अक्षर, भगवान् के पञ्च-कृत्यों—सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान एवं अनुग्रह—के प्रतीक हैं तथा साथ ही ये पाँच अक्षर पंच-महाभूतों एवं उनके मिश्रण से बनी इस समस्त सृष्टि के भी प्रतीक हैं।

'**ॐ नमः शिवाय**' भगवान् शिव का पंचाक्षर-मन्त्र है। '**नमः शिवाय**' का अर्थ है—भगवान् शिव को प्रणाम। देह-दृष्टि से जीवात्मा भगवान् शिव की दास ही है। यहाँ '**नमः**' जीवात्मा का प्रतीक है तथा '**शिव**' परमात्मा का प्रतीक है। अतः '**नमः शिवाय**', '**तत् त्वम् असि**' के समान एक महावाक्य है जो जीवात्मा एवं परमात्मा के एकत्व को सूचित करता है। सात करोड़ मन्त्रों में से पंचाक्षर-मन्त्र सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है। यजुर्वेद में सात स्कन्ध हैं। इसके रुद्राध्याय में एक हजार रुद्र-मन्त्र हैं। इन हजार रुद्र-मन्त्रों के मध्य में शिव-पंचाक्षर-मन्त्र शोभित होता है। इस मन्त्र का जप, साधक के जीवन के समस्त कष्टों एवं बाधाओं को दूर कर देता है तथा उसे शाश्वत आनन्द एवं अमरत्व प्रदान करता है।

भगवान् शिव की पूजा-उपासना में जाति एवं सम्प्रदाय के भेद का कोई स्थान नहीं है। दक्षिण भारत के तिरेसठ नयनार सन्त भगवान् शिव के परम भक्त थे। वे अलग-अलग जातियों से सम्बन्धित थे। वे सब भगवान् शिव के प्रति पूर्णतया समर्पित थे तथा उनके भक्तों की प्रेमपूर्वक सेवा करते थे। वे शैव-दर्शन, शैव-सिद्धान्त से अपरिचित थे। वे मन्दिर को स्वच्छ करने, भगवान् के लिए पुष्पमालाएँ बनाने, दीप जलाने, पुष्प-उद्यान लगाने, उनके भक्तों की सेवा करने में अपना समय व्यतीत करते थे। उनके लिए शिव-भक्तों की सेवा, स्वयं भगवान् शिव की उपासना से अधिक श्रेष्ठ थी। वे भगवद्-भक्तिपूर्ण जीवन को जाति-सम्प्रदाय के भेद से अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे।

एक दिन तिरुनिलनक्का नयनार भगवान् शिव की पूजा कर रहे थे। अचानक एक मकड़ी भगवान् शिव के विग्रह पर आ गिरी। उनकी पत्नी ने तुरन्त फूँक मारकर उसे वहाँ से हटा दिया परन्तु ऐसा करते हुए उस स्थान पर उनके मुँह से थूक के छींटे भी गिरे। इससे वे सन्त अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। उन्होंने सोचा कि भगवान् का विग्रह अपवित्र हो गया था। इस अपराध के कारण वे अपनी पत्नी का त्याग करना चाहते थे। परन्तु भगवान् शिव उन सन्त के स्वप्न में प्रकट हुए तथा उन्होंने उन्हें दिखाया कि मकड़ी के गिरने से किस प्रकार उनके पूरे शरीर पर फफोले हो गये थे; शरीर का केवल वही भाग सुरक्षित रहा था जिस पर उनकी पत्नी की थूक के छींटे गिरे थे। यह देखकर उन सन्त को बोध हुआ कि भगवद्-भक्ति, शास्त्रों के ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

एक अन्य सन्त सिरुथोन्डर ने शिव-भक्त को प्रसन्न करने के लिए अपने हाथों से अपने पुत्र को मारकर उसका मांस पकाया। शिव-भक्त की सेवा के लिए, वे शास्त्रों के नियमों के विरुद्ध जाने को भी तैयार थे। वे कोई महान् विद्वान् नहीं थे; तथा न ही दार्शनिक अथवा योगी थे; परन्तु भगवान् शिव के भक्तों के प्रति उनके हृदय में गहन श्रद्धा थी। एक शिव-भक्त की सेवा हेतु उन्होंने कितना महान् त्याग किया! भगवान् शिव, माता पार्वती सहित उनके समक्ष प्रकट हुए तथा उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उसी क्षण, वह शिव-भक्त तथा मांसयुक्त व्यञ्जन वहाँ से अदृश्य हो गये। सिरुथोन्डर घर से बाहर गये और उन्होंने अपने पुत्र को पुकारा। उनका पुत्र दौड़ते हुए उनके समीप आ गया। भगवान् अपने भक्त के लिए कुछ भी करते हैं, अर्थात् वे अपने भक्त के लिए सब कुछ करते हैं।

मदुरै में मूर्ति नयनार भगवान् शिव की पूजा के लिए चन्दन घिस कर अर्पित करते थे। एक बार जब चन्दन उपलब्ध नहीं हुआ, तो वे अपनी कोहनी को ही उस पत्थर पर घिसने लगे। भगवान् शिव का हृदय द्रवीभूत हो गया। उन्होंने उन सन्त को एक राज्य का राजा बना दिया। अन्त में, उन्हें भगवान् शिव का धाम भी प्राप्त हुआ।

थिरुकुरीप्पु थोन्डर, जाति से एक धोबी थे। वे शिव-भक्तों के वस्त्र धोते थे। एक बार भगवान् शिव ने उनकी परीक्षा लेने का विचार किया। भगवान् मैले वस्त्र पहने एक निर्धन व्यक्ति के रूप में उनके सामने प्रकट हुए। उन सन्त ने उनके मैले वस्त्र को धोया। उस दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी, इसलिए वे उस वस्त्र को सूखा नहीं पाये। इससे उनका मन अत्यन्त दुःखी हो गया और दुःख से कातर होकर, वे उसी पत्थर से अपना सिर टकराने लगे, जिस पर वे वस्त्र धोते थे। तत्क्षण भगवान् शिव प्रकट हुए और उन्होंने उन्हें मोक्ष-पद प्रदान किया।

कलिअ नयनार भगवान् शिव के मन्दिर में दीप-प्रज्वलन हेतु तेल उपलब्ध कराते थे। दुर्भाग्यवशात्, उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति खो दी। धन-प्राप्ति के लिए उन्होंने अपनी पत्नी को बेचने का विचार किया परन्तु कोई उन्हें खरीदने को तैयार नहीं हुआ। फिर, उन्होंने दीयों में तेल के स्थान पर अपने रक्त को अर्पित करने का निश्चय किया। जब वे ऐसा करने का प्रयास कर रहे थे, भगवान् शिव ने प्रकट होकर उन्हें आशीर्वादित किया।

ये नयनार सन्त शैव-सिद्धान्तों अथवा शैव-दर्शन को अधिक महत्त्व नहीं देते थे। वे भगवान् शिव की पूजा-उपासना को ही सर्वाधिक महत्त्व देते थे, चाहे यह पूजा उचित-अनुचित के सामान्य नियमों के विरुद्ध भी हो।

वे शिव-उपासना के बाह्य स्वरूप के प्रति अत्यधिक निष्ठावान् थे। वे उपासना की इन बाह्य क्रियाओं को सुरक्षित रखने के लिए अपने जीवन की आहुति तक देने को तैयार थे।

इन नयनार सन्तों के जीवन-चरित से आप यह अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि कोई भी मनुष्य भगवान् शिव की कृपा प्राप्त कर सकता है चाहे उसकी जाति, व्यवसाय अथवा सेवा कुछ भी हो।

भगवान् शिव के पावन नाम का जप चाहे उचित अथवा अनुचित रूप में किया जाये; जानकर अथवा अनजाने में किया जाये; ध्यानपूर्वक अथवा प्रमादपूर्वक किया जाये; यह इच्छित फल अवश्यमेव प्रदान करता है। भगवान् शिव के दिव्य नाम की महिमा को तर्क एवं बुद्धि से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। केवल श्रद्धा, भक्ति, उनके दिव्य नाम के सतत जप एवं उनकी भावपूर्ण स्तुति द्वारा ही इसकी अवर्णनीय महिमा का अनुभव किया जा सकता है। भगवान् का प्रत्येक नाम असंख्य शक्तियों से परिपूर्ण होता है। भगवन्नाम की शक्ति वर्णनातीत है। इसकी महिमा अनिर्वचनीय है। भगवान् शिव के पावन नाम की शक्ति एवं प्रभाव अमित है, अगाध है।

आप सबको भगवान् शिव की भावपूर्वक स्तुति करनी चाहिए तथा उनकी कृपा से भविष्य में नहीं, अपितु इसी क्षण मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। आप भगवान् शिव को अत्यन्त सरलता से प्रसन्न कर सकते हैं। महाशिवरात्रि के दिन पूर्ण उपवास करिए। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो दूध एवं फल लीजिए। सम्पूर्ण रात्रि जागरण करिए, उनकी महिमा का गान करिए तथा '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र का जप करिए।

आप सब पर भगवान् शिव के अनुग्रह की वृष्टि हो।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

मैं उन भगवान् सदाशिव को नमस्कार करता हूँ जो परम सत्य हैं, सर्वमन्त्र एवं सर्वतन्त्र स्वरूप हैं, ज्ञानातीत हैं, साक्षात् ब्रह्म और रुद्र हैं, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि जिनके नेत्र हैं, पवित्र भस्म से जिनका शरीर सुशोभित है, जो रत्न-मणि-जटित मुकुट एवं आभूषण धारण किये हुए हैं, जो अखिल विश्व के एकमात्र कर्ता, भर्ता और संहारक हैं, जो दक्ष-यज्ञ विध्वंसक हैं, जो कालहारी, मूलाधारनिवासी और तत्त्वातीत हैं, जिनके शीश पर पावन गंगा का नित्य निवास है, जो सबके अन्तर्वासी, षड्गुण सम्पन्न, दर्शन का सार हैं, जो त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) प्राप्ति का साधन हैं और विश्वनाथ हैं, जो कण्ठ में अष्ट नागेन्द्र हार धारण किये हुए हैं तथा ॐ जिनका वाचक है।

मैं उनकी उपासना करता हूँ जो चैतन्य स्वरूप हैं, आकाश और दिशाएँ जिनका स्वरूप हैं, नक्षत्र और तारे जिनके कण्ठाभूषण हैं, जो नित्य-शुद्ध और निर्मल हैं, सकल लोकगुरु हैं, जो समस्त संसार के एक ही साक्षी हैं, वेदों के गूढ़ तत्त्व हैं, समस्त शास्त्रों से परे हैं, सबको वर देने वाले हैं तथा जो दीन-दुःखियों व अज्ञानियों पर दया-वृष्टि करने वाले हैं।

स्वामी शिवानन्द

नववर्ष सन्देश

विश्व–शान्ति हेतु अचूक उपाय

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

आजकल सर्वत्र शान्ति, समृद्धि, एकता, बन्धुत्व, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक कल्याण एवं विश्व–उत्थान हेतु पुकार उठ रही है। मानवता ने अनेक संकटों एवं त्रासदियों का अनुभव किया है, तथा शान्ति की स्थापना के लिए अपने बौद्धिक संसाधनों का उपयोग करते हुए अनेकानेक उपाय अपनाये हैं, परन्तु इसमें इसे सफलता प्राप्त नहीं हुई है। इस असफलता का कारण यह हो सकता है कि मानव–जाति स्वयं ही अपने उद्देश्यों के प्रति स्पष्ट धारणा नहीं रखती है; अथवा इसके कार्य करने के साधन सशक्त एवं सक्षम नहीं हैं; अथवा इसकी कार्यविधि का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक नहीं किया गया है। इसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारण तो यह है कि इसके समस्त कार्यों में उस केन्द्रीय धुरी का अभाव है जिसे 'भगवान्' कहा जाता है।

आज हमारे युवक–युवतियाँ कृत्रिम सभ्यता की बाह्य चमक–दमक से दिग्भ्रमित हो रहे हैं, भौतिक समृद्धि की चकाचौंध से अन्धे हो रहे हैं। वे यह समझने में असमर्थ हैं कि 'भगवान्' एवं 'धर्म' का वास्तविक अभिप्राय क्या है। भगवान् वह अविनाशी एवं अक्षुण्ण सत्ता है जो इस नित्य–विनाशशील एवं नित्य–क्षयमान होते विश्व का एकमात्र आश्रय एवं अधिष्ठान है। एक शाश्वत एवं अपरिवर्तनशील तत्त्व की पूर्वधारणा के बिना इस सतत परिवर्तनशील जगत् का कोई महत्त्व कैसे हो सकता है? यदि परिपूर्णता का अस्तित्व नहीं है, तो मनुष्य के हृदय में परिपूर्णता प्राप्ति की सतत इच्छा क्यों बनी रहती है? नित्य–परिवर्तित एवं नाश होते इस जगत् में आप चिरस्थायी एवं शाश्वत शान्ति हेतु पुकार क्यों करते हैं? इस जगत् एवं इसके समस्त प्राणियों का क्षण–भंगुर स्वरूप तथा मानव–मन में परिपूर्णता एवं शान्ति प्राप्त करने की निरन्तर उत्कण्ठा यह दर्शाते हैं कि एक अनन्त, शाश्वत परिपूर्ण तत्त्व है, जो शान्ति एवं आनन्द स्वरूप है तथा जो इस नाशवान् जगत् का आधार है। यह शाश्वत परिपूर्ण चैतन्य तत्त्व 'भगवान्' हैं तथा उनकी प्राप्ति का माध्यम 'धर्म' है। इसलिए भगवान् एवं धर्म के प्रति घृणा, बचकाने व्यवहार के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है और इस व्यवहार का कारण अज्ञान एवं उचित समझ का अभाव है।

जिनकी भगवान् एवं धर्म के विषय में गलत अवधारणा है, उन्हें इनका वास्तविक अर्थ समझाया जाना चाहिए। लोगों को यह विचार छोड़ देना चाहिए कि भगवान् कहीं दूर किसी दिव्य लोक में सिंहासन पर विराजमान मानवरूपधारी एक सत्ता हैं तथा चर्च एवं मन्दिरों में उनकी प्रतिमाओं को प्रणाम करना और अपने लाभ अथवा अपने शत्रुओं को दण्डित करने के लिए उनसे प्रार्थना करना ही धर्म है। सभी मनुष्यों के हृदय, धर्म के वास्तविक अभिप्राय को समझकर इसकी आनन्दप्रदायक शक्ति से भर जाने चाहिए। शाश्वत तत्त्व 'परमात्मा' की परम परिपूर्णता, परम शान्ति एवं परम आनन्द को प्राप्त करने के अतिरिक्त जीवन का कोई अन्य उद्देश्य नहीं है; प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सभी मनुष्य यही प्राप्त करना चाहते हैं। जीवन के इस सर्वोच्च उद्देश्य की प्राप्ति केवल तभी सम्भव है जब मनुष्य यह समझें कि भगवान् के विषय में समस्त अवधारणाएँ एक

परम, अविनाशी, अनन्त, शाश्वत, दिव्य सत्ता के ही विविध पक्ष हैं; तथा धर्मों के समस्त प्रकार इस 'एक परम सत्य' की प्राप्ति के 'महान् मार्ग' के विविध स्वरूप हैं। इस तथ्य को उचित प्रकार से समझने से जीवन की सभी प्रकार की त्रुटियों-गलतियों का सुधार होगा तथा विश्व में शान्ति स्थापना एवं मानवता को परिपूर्ण बनाने का उपाय भी प्राप्त होगा।

परिपूर्णता की इस अवस्था की प्राप्ति केवल बातचीत करने अथवा कुछ कार्य करने से सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति हेतु आत्म-शुद्धिकरण, पूर्णता की सच्ची आकांक्षा, श्रद्धा-विश्वास, गम्भीरता, लगन, सहनशीलता, नैतिक बल, सत्य, स्वार्थ का त्याग एवं आन्तरिक संवेगों-कामनाओं का दमन आवश्यक है। इनके बिना, शान्ति एवं परिपूर्णता प्राप्ति के सभी प्रयास असफल ही होंगे।

इसलिए समस्त राष्ट्रों का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वे उचित प्रशासन एवं उचित शिक्षा-व्यवस्था द्वारा तथा परम सत्य पर आधारित उचित जीवन जीने की प्रेरणा द्वारा जन-जन के हृदय को परिवर्तित करें जिससे प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव मानवीय दुर्बलताओं से मुक्त होकर दिव्यता से युक्त बने। सभी राष्ट्रों के इस प्रयास से धरा पर मनुष्यों का जीवन स्वास्थ्य एवं शान्ति से सुसमृद्ध होगा तथा शाश्वत जीवन की प्राप्ति हेतु उनका मार्ग भी प्रशस्त होगा। यह इस नववर्ष हेतु मेरा सन्देश है जो सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण के एक नये युग के आगमन का सूचक है।

यह नववर्ष आप सबके लिए अत्यन्त मंगलमय हो। सम्पूर्ण विश्व में शान्ति, समृद्धि एवं सौहार्द हो।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

मानवीय अस्तित्व का केन्द्रीय प्रयोजन सर्वोच्च सत्ता अर्थात् ब्रह्म से अपने शाश्वत तादात्म्य से परिचित होना तथा स्वयं को उस दिव्य सत्ता के अनुरूप विकसित करना है। सर्वोच्च सत्ता में आत्यन्तिक पूर्णता निहित है जो पूर्णतः विशुद्ध अर्थात् निरंजन है। उस सर्वोच्च सत्ता के साथ अपने सायुज्य से परिचित और उसके तद्रूप होना उस (सर्वोच्च) सत्ता के साथ निश्चित रूप से समस्वरता प्राप्त कर लेना है। अतः प्रारम्भ में साधक को उन असंख्य अशुद्धताओं तथा आसुरी तत्त्वों से मुक्त होना है जो उसके पार्थिव शरीर-धारण की अवस्था में उसके साथ चिपक गये हैं। इसके पश्चात् उसे उदात्त, शुभ एवं दिव्य गुण प्राप्त करने हैं। इस प्रकार उसके विशुद्ध हो जाने तथा सत्त्वगुण से सम्पन्न होने के पश्चात् वह ज्ञान की दीप्ति से उसी प्रकार उद्दीप्त हो उठता है जिस प्रकार किसी पूर्णतः शान्त सरोवर का पारदर्शी जल सूर्य की प्रोज्ज्वल किरणों से द्युतिमान् हो जाता है।

स्वामी शिवानन्द

ज्ञान भक्ति को सफल एवं परिपूर्ण बनाता है

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हे परम दिव्य सत्ता! आपको श्रद्धापूर्वक प्रणिपात। आप हमें अपने सतत सान्निध्य के प्रति जाग्रत करिए ताकि हम आपके उस दिव्य प्रकाश से आलोकित जीवन व्यतीत कर सकें जो हमारे भीतर ज्ञान एवं विवेक के रूप में विभासित होता है तथा जो अज्ञान एवं मूर्खता का नाश करता है। हम सब ज्ञान एवं विवेक के प्रकाश में अपना जीवन व्यतीत करें; क्योंकि इसमें ही हमारा कल्याण है।

हे परम प्रिय एवं परम आराध्य गुरुदेव! आप पतितपावनी गंगा एवं हिमालय के इस पवित्र उत्तराखण्ड क्षेत्र में, वेदान्त-ज्ञान की महान् ज्योति के रूप में दीप्तिमन्त हुए। आप हमारी यह प्रार्थना स्वीकार करिए, ''**तमसो मा ज्योतिर्गमय**—हम अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर प्रगति करें।'' हमें उस ज्ञान एवं विवेक से आशीर्वादित करिए जो हमें परम शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति कराये। क्योंकि हम जानते हैं कि आपने अपना सम्पूर्ण जीवन ज्ञान-यज्ञ अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित किया है। आप जीवनपर्यन्त उपनिषदों के ज्ञानोपदेश को जन-जन तक पहुँचाने में संलग्न रहे हैं जो सम्पूर्ण मानवता की सर्वोच्च निधि है। समस्त वैश्विक परिवार, वैदिक ज्ञान की इस अमूल्य सम्पदा से सुसमृद्ध हुआ है।

सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म। परम तत्त्व सत्यस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है। यह असीम एवं अनन्त है। क्योंकि यह परम निरपेक्ष सत्ता है, समस्त उपाधियों-सीमाओं से परे है; इसलिए यह अनन्त है। यह ज्ञान अपरिमेय ज्ञान है, कैवल्य ज्ञान है। यह ज्ञान रूपी अमृत है—कैवल्य-ज्ञान-अमृत।

उज्ज्वल अमर आत्मन्! एक साधक, एक योगी को जिज्ञासु कहा जाता है। जिज्ञासु से अभिप्राय वह व्यक्ति है जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जिज्ञासु शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'ज्ञा' धातु से हुई है जिसका अर्थ है—जानना। जिस मनुष्य में ज्ञान प्राप्ति की गहन उत्कण्ठा है, जो ज्ञान प्राप्ति हेतु गम्भीर प्रयास करता है, वह जिज्ञासु कहलाता है। एक सच्चे साधक के लिए जिज्ञासु होना उचित है।

वैदिक संस्कृति में 'मोक्ष अथवा मुक्ति' को जीवन का सर्वोच्च पुरुषार्थ घोषित किया गया है। सद्योमुक्ति हो अथवा क्रमिक मुक्ति हो, मुक्ति ही मनुष्य-जीवन का परम लक्ष्य है। श्रुतियों की यह उद्घोषणा है, ''**ऋते ज्ञानं न मुक्तिः**—ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है।'' यह एक अत्यन्त सुस्पष्ट घोषणा है। अतः, एक साधक के लिए जिज्ञासु होना आवश्यक है।

ज्ञान कल्याणकारी होता है। यह सर्वोत्तम एवं महानतम कल्याणकारक है। भक्ति भी सर्वोच्च कल्याणकारी है; यह भी मुक्ति प्रदान कर सकती है। परन्तु यदि भक्त के हृदय में भक्ति के साथ-साथ अज्ञान का भी वास हो, तो वह स्वयं के लिए दुःख-कष्ट ही आमन्त्रित करता है। समस्त महान् भक्तों, महान् सन्तों के जीवन को

'द स्पेशल इन्साइट्स इन्टू साधना' पुस्तक से उद्धृत आलेख का अनुवाद

देखने से यह बात प्रमाणित होती है। जब उन्होंने अविवेकपूर्ण आचरण किया, वे किसी न किसी कठिनाई में फँसे। फिर उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की और उन्हें अपनी सहायता हेतु पुकारा, ''हे प्रभु! सब कुछ समाप्त हो गया। कृपया मेरी सहायता करिए। आप ही असहायों के आश्रय हैं। अज्ञानतावश, मुझसे यह कार्य हो गया है। कृपया मेरी रक्षा करिए।''

इस प्रकार, जब-जब उन्होंने अविवेकपूर्ण कार्य किया, उन्हें भगवान् की कृपा हेतु, सहायता हेतु पुकार करनी पड़ी। ऐसा हम सभी साधकों-भक्तों के जीवन में देखते हैं फिर चाहे वे कितने सच्चे साधक हों तथा भगवान् के प्रति उनकी भक्ति एवं निष्ठा कितनी सच्ची हो। जब-जब उन साधकों-भक्तों ने अपने विवेक को खोया, ज्ञान को खोया और वे अहंकारी हो गये, इच्छाओं-कामनाओं के जाल में फँस गये, तब-तब उन्होंने अत्यन्त कष्ट पाया ।

इसलिए, भगवद्-भक्ति श्रेयकर है परन्तु जब भक्त के जीवन में अज्ञान एवं विवेकहीनता का प्रवेश हो जाता है, तो भक्ति असफल हो जाती है। अत: भक्ति के साथ ज्ञान की भी आवश्यकता है। एक प्रार्थना बहुत प्रचलित है—''हे प्रभु! जिन परिस्थितियों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, उन्हें स्वीकार करने हेतु हमें धीरता प्रदान करिए; तथा जिन परिस्थितियों को परिवर्तित किया जा सकता है, उन्हें परिवर्तित करने की शक्ति दीजिए और इन दो प्रकार की परिस्थितियों के बीच अन्तर कर पाने का ज्ञान एवं विवेक दीजिए।''

''हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए''—यह उस प्रार्थना की प्रथम पंक्ति है जिसे आप सब रोज गाते हैं। अब यदि सब प्रसन्नता एवं आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तथा भगवान् को 'आनन्ददाता' नाम से सम्बोधित करते हैं, तो फिर इसके तुरन्त बाद 'ज्ञान' की याचना क्यों करते हैं? यह प्रश्न मनन करने योग्य है; क्योंकि यह सिद्ध करता है कि जब आप आनन्ददाता प्रभु से आनन्द-प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं; तब आप स्वयं यह भली-भाँति जानते हैं कि भगवान् आपको आनन्द प्रदान करने के लिए तत्पर हैं, परन्तु यदि आप अज्ञानता एवं विवेकहीनता के पथ पर चलेंगे तो आप स्वयं ही अपने आपको आनन्द से वंचित कर देंगे। इसलिए कहते हैं, **''हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।**'' ज्ञान किसलिए चाहिए—आनन्द प्राप्ति के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं, समस्त आसुरी एवं अनाध्यात्मिक तत्त्वों को दूर करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। **''शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए। लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें। ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, सत्यव्रतधारी बनें।**'' हे प्रभु ! हमें आपके प्रति समर्पित होने, अपने अहंकार को आपके चरणों में अर्पित करने, सदाचार के पथ पर चलने के लिए ज्ञान प्रदान कीजिए क्योंकि सदाचार एवं धर्म में संस्थित होने से ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। हमें इस ज्ञान की सावधानीपूर्वक रक्षा करनी चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि ज्ञान ही शान्ति एवं आनन्द प्राप्ति को सुनिश्चित करता है। हे प्रभु! हमें सत्यव्रत पालन हेतु, सत्य के प्रति निष्ठावान हेतु ज्ञान एवं सामर्थ्य दीजिए।

यही वह ज्ञान है जिसकी इस प्रार्थना में याचना की गयी है। क्योंकि जहाँ ज्ञान है, वहीं शान्ति एवं सुख है। ज्ञान के बिना, मनुष्य दु:ख एवं कष्ट ही पाता है। अर्जुन भी अत्यन्त दु:खी हुए थे जब उन्हें ज्ञान की विस्मृति हो गयी

थी। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं, ''ज्ञानी जन शोक नहीं करते हैं। वे सबको समदृष्टि से देखते हैं। ज्ञान के प्रकाश में जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य उन तुच्छ, अस्थायी, अपूर्ण, देश-काल की सीमाओं में आबद्ध वस्तु-पदार्थों के पीछे नहीं भागता है जो दु:ख के कारण होते हैं। इसलिए वह ज्ञानी कहलाता है; वह भली-भाँति जानता है कि वास्तविक शान्ति एवं आनन्द कहाँ है। वह जीवन के प्रत्येक पग पर विवेकशील रहने का प्रयास करता है।''

अत:, एक साधक को जीवन के इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को समझना चाहिए कि यद्यपि भगवद्-भक्ति आवश्यक एवं श्रेयकर दोनों है; परन्तु यह ज्ञान ही है जो भक्ति को सफल एवं परिपूर्ण बनाता है। भक्ति के माध्यम से शान्ति एवं प्रसन्नता केवल तभी प्राप्त होती है, जब भक्ति को ज्ञान का सहयोग एवं आश्रय प्राप्त हो। श्री रामकृष्ण परमहंस कहते थे, ''एक भक्त को मूर्ख-अविवेकी नहीं होना चाहिए। ज्ञान सर्वोच्च कल्याणकारक है क्योंकि यह भक्ति को सफल बनाता है।''

इसलिए एक साधक, जिज्ञासु भी होता है। वह सदैव ज्ञान एवं विवेक में संस्थित रहने का प्रयास करता है। ज्ञान आपका महान् मित्र है। विवेक एवं बुद्धिमत्ता आपके नित्य सखा हैं। सत्संग, सद्विचार, जीवन के सूक्ष्म निरीक्षण एवं परीक्षण से हम ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता प्राप्त करते हैं। हम अन्य व्यक्तियों की मूर्खताओं से बुद्धिमत्ता का पाठ सीखते हैं। एक सच्चा साधक प्रत्येक क्षण कुछ-न-कुछ सीखता है। इस प्रकार, वह ज्ञान के पथ पर अग्रसर होता है; उसकी बुद्धि का विस्तार होता है। ज्ञान के प्रकाश में जीवन व्यतीत करने के कारण, वह पूर्णत: आश्वस्त होता है कि परम शान्ति एवं आनन्द प्राप्ति के उसके प्रयास निष्फल नहीं होंगे; वह पूर्ण सफलता प्राप्त करेगा।

इसलिए इस सत्य पर गहन चिन्तन करिए कि ज्ञान आपका मित्र है, यही सर्वोच्च कल्याणकारक है। परब्रह्म ज्ञानस्वरूप है—**सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म।** श्रीमद्भगवद्गीता भी इस तथ्य को पुन:-पुन: घोषित करती है कि यदि आप वास्तविक शान्ति एवं आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं, अपनी साधना को सफल बनाना चाहते हैं, तो ज्ञान का आश्रय लीजिए। विवेकहीनता-अज्ञानता का त्याग करके ज्ञान के पथ पर चलिए। क्योंकि ज्ञान ही आपका श्रेष्ठतम सहायक है, सखा है जो आपको उचित दिशा का मार्गदर्शन देगा।

यह ज्ञान शुष्क बौद्धिकवाद नहीं है, व्यर्थ की तार्किकता नहीं है, न ही यह तथ्यों का खण्डन-विखण्डन करने वाला तर्कवाद है; यह इनसे श्रेष्ठ है। शुष्क बौद्धिकवाद अथवा तार्किकता केवल एक बोझ ही बन जाता है। यह एक प्रकार का जाल है; यह मनुष्य के अहंकार में वृद्धि करता है। इसलिए, एक विवेकवान साधक स्वयं को इससे बचाता है। इस प्रकार के बौद्धिक ज्ञान को मौखिक-वेदान्त (Lip-Vedanta) कहते हैं। यह मस्तिष्क की ही कृति है। इसे सच्चा, श्रेष्ठ ज्ञान अथवा बोध नहीं कहा जा सकता है। यह तुच्छ ज्ञान है जो अहंकार से सम्बन्धित है, उसका पोषण करता है।

एक साधक को आध्यात्मिक ज्ञान एवं शुष्क बौद्धिकवाद-तार्किकता के मध्य के अन्तर को समझना चाहिए। अहंकार से उत्पन्न तार्किकता, अज्ञानपूर्ण एवं अविवेकपूर्ण है। 'मैं सब कुछ जानता हूँ'—यह भावना ही

अज्ञान एवं विवेकहीनता की सूचक है। इस प्रकार की भावना आपको मुक्ति प्रदान नहीं करती है। यह आपको आपके अहंकार के जाल में बाँध देती है।

इसलिए आपको रजस् से उत्पन्न इस प्रकार के शुष्क बौद्धिकवाद को उच्चतर आध्यात्मिक ज्ञान से पृथक् समझना चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान सदैव सात्त्विक होता है। आध्यात्मिक ज्ञान के साथ विनम्रता आती है क्योंकि साधक यह अच्छी तरह से समझ जाता है कि वह कुछ भी नहीं जानता है तथा केवल भगवद्-अनुग्रह से ही वह ज्ञान के पथ पर चल सकता है। अत: वास्तविक ज्ञानी कभी अहंकारी नहीं होता है। अहंकारशून्यता ही ज्ञान का विशिष्ट लक्षण है।

एक ज्ञानी मनुष्य ने कहा है, ''मेरा ज्ञान समुद्र के किनारे पर बिखरी रेत के कुछ कणों के समान है, परन्तु मेरा अज्ञान विशाल समुद्र के समान है।'' इसलिए ज्ञानी-विवेकी बनिए। ज्ञान से आलोकित पथ पर चलिए। यह जान कर विनम्र बनिए कि ज्ञान की प्राप्ति परमात्मा के अनुग्रह से होती है। ज्ञान एवं विवेक के प्रकाश में जीवन व्यतीत करते हुए शान्ति एवं आनन्द को प्राप्त करिए। यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है।

ज्ञान आपका सतत सहचर बने। यह सदैव आपकी भक्ति एवं आध्यात्मिकता का सहगामी हो। क्योंकि, ज्ञान ही आपके लिए परम-कल्याण-प्रदाता है तथा यही उस शान्ति एवं आनन्द को प्राप्त करने का सुनिश्चित उपाय है जिसकी आप एवं समस्त मनुष्य आकांक्षा करते हैं। इसलिए, अपने जीवन में ज्ञान के महत्त्वपूर्ण स्थान को समझिए तथा स्वयं को धन्य बनाइए। परम पिता परमात्मा की कृपा आप सब पर हो।

हरि ॐ तत् सत्।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

सभी जीवों में वैश्विक आत्मा का दर्शन ज्ञान है, इस वैश्विक आत्मा के प्रति प्रेम भक्ति है तथा इसकी सेवा कर्म है। ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् ज्ञानयोगी भक्ति तथा निष्काम कर्म से सम्पन्न हो जाता है। कर्मयोग उसकी आध्यात्मिक प्रकृति की एक सहज अभिव्यक्ति है; क्योंकि वह सर्वभूतों में एक ही आत्मा का दर्शन करता है। जब भक्त भक्तियोग में निष्णात होता है, तब वह ज्ञान तथा कर्म से भी सम्पन्न हो जाता है। उसके लिए भी कर्मयोग उसकी दिव्य प्रकृति की सहज अभिव्यक्ति हो जाता है; क्योंकि उसे ईश्वर के दर्शन सर्वत्र होते हैं। कर्मयोगी के लिए ज्ञान तथा भक्ति की सम्प्राप्ति तभी सम्भव होती है, जब उसके कर्म पूर्णतः निष्काम हो जाते हैं। ये तीनों मार्ग वस्तुतः एक ही हैं। तीन भिन्न स्वभाव वाले व्यक्तियों में इन तीनों में से एक अपने शेष अविच्छेद संघटक तत्त्वों पर प्रधानता प्राप्त कर लेता है। योग से हमें उस विधि की प्राप्ति होती है जिससे हम आत्मा का दर्शन करने, उसके प्रति अपना प्रेम एवं सेवा अर्पित करने में समर्थ हो पाते हैं।

स्वामी शिवानन्द

जीवेम शरदः शतम्

सुश्री प्रकाश अग्रवाल

भारत के अन्यतम मनीषी, युग-ऋषि के उन पूज्य पुनीत श्रीचरणों में **जीवेम शरदः शतम्** की हार्दिक भावना के साथ मेरे शतशः प्रणाम श्रद्धापूर्वक निवेदित हैं जो अथक रूप से अपने गन्तव्य की ओर सतत गतिशील हैं।

भावनाएँ प्रायः शब्दों में नहीं बाँधी जा सकतीं और भावनाएँ हैं कि अपनी अभिव्यंजना चाहती ही हैं; परन्तु जिसकी अभिव्यक्ति के लिए पूरा शब्दकोश ही अपर्याप्त हो, वह भावना भी किस अनिर्वचनीय अनुभूति पर आधारित होगी, इसे तो वे व्यक्ति ही समझ सकेंगे जिन्हें प्रभु-कृपा से पूज्य स्वामी जी महाराज के निकट आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

उनका मुखरित स्मित हास साधक के दुष्कर साधना-पथ पर पाटल-दल बिछा देता है जिससे मुक्ति-पथ के पथिकों को साधना की 'असिधार' पर सोल्लास बढ़ते जाना कठिन नहीं रह जाता। दृढ़ता का परिचय देने वाले अधरों से जब हँसी का स्रोत प्रवाहित होता है, तब वह शुभ्र हास स्वयं बहता, हमें बहाता तथा अपनी निर्मलता और हमारी विषण्णता के अन्तर को अपनी आर्द्रता से भर कर कम करता जाता है। वाणी और हास की निस्तब्धता में इस महान् युग-द्रष्टा, परम योगी के कर्मनिष्ठ जीवन का एक अभूतपूर्व अध्याय हमारे समक्ष खुल जाता है।

भावना, ज्ञान और कर्म जब एक सम पर मिलते हैं, तभी युग-प्रवर्तक महापुरुष प्राप्त होता है। बुद्धि, हृदय तथा कर्म के पृथक्-पृथक् लक्ष्य विश्व को दार्शनिक, कलाकार या सुधारक दे सकते हैं, परन्तु उन सबकी समग्रता नहीं दे सकते। जो जीवन को सब ओर से एक-साथ स्पर्श कर सकता है, उस व्यक्ति को युग-जीवन अपनी सम्पूर्णता के लिए स्वीकार करने को बाध्य हो जाता है। पूज्य स्वामी जी ऐसी ही युगवन्द्य विभूति हैं, युग के लिए भगवद्-वरदान हैं।

'तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः' श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन को जिस प्रकार का योगी बनने के लिए कहते हैं—जिसमें भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों एक-साथ समाविष्ट हों—स्वामी जी महाराज वैसे ही योगी हैं।

उनके दिव्य व्यक्तित्व की अनेक शाखाओं, उपशाखाओं में फैली विशालता, सामर्थ्य में और अधिक सघन हो कर किसी को उद्धत होने का अवकाश नहीं देती। उनकी विनोदप्रिय सहज स्वीकृति किसी को उदासीन रहने का अधिकार नहीं सौंपती और उनकी रहस्यमयी स्पष्टता किसी को कृत्रिम बन्धनों में नहीं बाँधती। जब कभी कोई जिज्ञासु या साधक साधारण कौतूहल में पथ से फिसलने लगता है तब उनकी स्नेह-तरलता हिम का दृढ़ स्तर बन जाने वाले जल के समान उसे ठहरा लेना नहीं भूलती। उनके अपराजेय आस्था और विश्वास के स्वरों में संक्रामक प्रभाव है जो मानव में अप्रतिहत रूप से परम लक्ष्य की ओर उन्मुख होने की प्रबल प्रेरणा भर देता है।

और जिस समय वे आशीर्वचन कह कर तटस्थ भाव से अपने कक्ष में चले जाते हैं, उस समय हम सोचते ही रह जाते हैं कि हमने व्यक्ति के दर्शन किये हैं अथवा चिर-सजग साधना को मूर्तिमन्त देखा है।

पूज्य स्वामी जी की समस्त रचनाएँ उनकी मूर्धन्य प्रतिभा और सहज (intuitive) ज्ञान की परिचायक हैं। तत्त्व-चिन्तन में ऐसा बहुत कम मिलेगा जिसे उन्होंने नया आलोक फेंक कर नहीं देखा, और देख कर उसकी व्याख्या नहीं की। यद्यपि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा जो पहले नहीं कहा गया, पर इस प्रकार सब-कुछ कहा जिस प्रकार किसी और युग में नहीं कहा गया। अभिनव जीवन का सन्देश अनेक बार अनेक तरह से दोहराया।

धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान का वह अजस्र प्रवाह जिसमें न विचारों को शब्दों की खोज में ठहरना पड़ता है और न शब्दों को विचारों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है—अतल-स्पर्शी उत्स से उद्‌भुत हो श्रोताओं को निमज्जित करता जाता है। हम उनकी वाणी से नि:सृत अन्त:सलिला के प्रकट प्रवाह में डूबते-उतराते मन्त्र-मुग्ध से सन्तरण करते जाते हैं। हमारे अन्तर का समग्र सब-कुछ जैसे उनकी वाणी को सुनने के लिए कर्ण-कुहर बन जाता है। कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं जब व्यक्ति का दिशा-बोध भी लुप्त हो जाता है।

व्यवहार में वे उस ज्ञानोन्मुख भाव-भूमि पर अवस्थित हैं जहाँ कोई पराया नहीं रह जाता, सब अपने आत्मस्वरूप हो जाते हैं। स्वामी जी महाराज अखिल सृष्टि को उसी विराट् का स्वरूप मानते हैं। इसी विराट्-भावना से अनुप्राणित हो कर कण-कण उनका अपना हो जाता है।

वे युग के सन्देहवाहक हैं, स्वयं में एक महान् तीर्थ हैं। युग के उन्हीं सौम्य सन्त को पुन: मेरे अनेकानेक श्रद्धान्वित प्रणाम।

उपासना ईश्वर के प्रति भक्ति, श्रद्धा और प्रेम की अभिव्यक्ति है। यह ईश्वर से सायुज्य की तीव्र लालसा और उनसे हार्दिक तदाकारिता की आध्यात्मिक पिपासा की द्योतक है। भक्त भगवान् से उनके प्रति उत्कट भक्ति की सम्प्राप्ति तथा अज्ञानावरण के अपनयन के लिए प्रार्थना करता है। वह उनके सौम्य अनुग्रह के लिए लालायित रहता है। वह उनके निरन्तर नाम-स्मरण, उनके मन्त्रों के जप, उनके गुणगान तथा उनके कीर्तन में संलग्न रहता और उनकी लीलाओं का श्रवण तथा गायन करता है। वह उनके भक्तों की सुसंगति में उनके धाम में निवास करता है। वह उनके रूप, उनकी प्रकृति, उनके गुणों और उनकी लीलाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किये रहता है। वह अपने नेत्रों को बन्द करके प्रभु के स्वरूप का मानस-दर्शन करता है तथा परम शान्ति और आनन्द का उपभोग करता है।

स्वामी शिवानन्द

तिरेसठ नयनार सन्त :

कुलाच्चीरै नयनार

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिव-भक्तों की भगवान् शिव के प्रति भक्ति में कुलाच्चीरै नयनार अग्रणी थे। उनका जन्म पाण्ड्य राज्य में मनामेरकुजी में हुआ था। इस स्थान पर भगवान् शिव की कृपा-वृष्टि होती रही थी। कुलाच्चीरै नयनार लोगों का नेतृत्व और सहायता, दोनों ही समान रूप से करते थे। उनके लिए शिव-भक्तों और भगवान् शिव में किंचित् भी अन्तर नहीं था।

यद्यपि वे पाण्ड्य राजा के प्रमुख मन्त्री थे, तथापि वे स्वयं को शिव-भक्तों का दास ही मानते थे। वे अपने नगर के सबसे अधिक धनवान् व्यक्ति थे; किन्तु उनके लिए समस्त धन-दौलत धूल के समान थी। वे कुछ भी अपना नहीं मानते थे, इसे वे शिव-भक्तों की सम्पत्ति समझते थे। सम्बन्धर तक ने अपने एक भजन में उनके विविध गुणों का महिमागान किया था।

नयनार एक वीर सैनिक और सुयोग्य प्रबन्धक थे, तथापि उनका मन सदैव भगवान् के चिन्तन में लीन रहता था। उन्होंने जैनधर्म के दुष्प्रभाव के वेग को नष्ट करने में रानी की सहायता की। नयनार ने इस कुप्रभाव को समाप्त करने के लिए सम्बन्धर को मदुरै आने का निमन्त्रण दिया। जैन लोगों ने सम्बन्धर के शिविर को जला दिया। सम्बन्धर ने एक भजन गाया और अग्नि तुरन्त शान्त हो गयी। पाण्ड्य राजा को तीव्र ज्वर हो गया जिसका उपचार जैन नहीं कर सके; किन्तु सम्बन्धर ने भस्म का लेप करके ज्वर दूर कर दिया। सम्बन्धर ने जैन साधुओं को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया। कुलाच्चीरै ने पराजित हुए जैन लोगों को फाँसी देने के लिए भेज दिया। वे शिव-भक्तों की सेवा में संलग्न रहे और अन्ततः शिवलोक को प्राप्त किया।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

प्राचीन ऋषियों, द्रष्टाओं, सन्तों, परमहंस संन्यासियों तथा साधुओं को प्रणाम! ये लोग दिव्य ज्ञान तथा सम्यक् बुद्धि के आगार एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य में संसार के भाग्य के नियामक हैं।

प्रत्येक धर्म में एक ऐसे वर्ग की व्यवस्था है जो चिन्तन और ध्यान का एकान्त तपस्वी जीवन व्यतीत करता है। इन्हें बौद्धों में भिक्षु, मुसलमानों में फकीर, सूफियों में सूफी फकीर और ईसाइयों में फादर तथा रेवेरेण्ड कहा जाता है। यदि आप किसी धर्म के मानचित्र से इन सन्तों अथवा संन्यासियों या विरक्त तथा दिव्य ध्यान का जीवन व्यतीत करने वालों का अभिलोपन कर दें, तो उस धर्म की गरिमा पूर्णतः नष्ट हो जायेगी। यही वे लोग हैं जो संसार के धर्मों का रक्षण-पोषण करते है तथा दुःखी एवं शोकाकुल गृहस्थों को सान्त्वना प्रदान करते हैं। ये लोग आत्मज्ञान, स्वर्गिक शान्ति तथा दिव्य ज्ञान के अग्रदूत और अध्यात्म-विज्ञान तथा औपनिषद् ज्ञान के प्रचारक-प्रसारक होते हैं। ये रोगियों का रोग-निवारण करते, निराश्रितों को सान्त्वना प्रदान करते तथा रोग-शय्या पर पड़े रोगियों की परिचर्या करते हैं। ये वेदान्त-ज्ञान तथा 'तत्त्वमसि' महावाक्य के निहितार्थ को समझा कर निराश व्यक्तियों को आशा, हताश जनों को प्रफुल्लता, निर्बलों को बल एवं कायरों को साहस प्रदान करते हैं।

स्वामी शिवानन्द

आपका शान्ति-दूत :

ध्यान योग

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

(पूर्व-अंक से आगे)

वेदान्तीय ध्यान

जो साधक इष्टदेव पर ध्यान करते हैं, वे किसी सुदृढ़ रूपाकार का चिन्तन करते हैं। रूप सौन्दर्य से भरपूर तथा सुस्पष्ट होता है, क्योंकि यह भौतिक अथवा स्थूल न हो कर आध्यात्मिक है। यह सूक्ष्म और शुद्ध सत् चित् आनन्द से निर्मित तथा प्रकाश, सौन्दर्य एवं दिव्यता से सम्पन्न है। यद्यपि प्रत्येक के द्वारा चयन किये जाने वाले रूप भिन्न हो सकते हैं; किन्तु भले ही कोई भी रूप हो, ये गुण सभी में एक-समान होते हैं। जो निर्गुण ब्रह्म पर वेदान्तीय ध्यान करते हैं, उनके समक्ष कोई रूप-आकार न हो कर परब्रह्म को एक अनन्त सत्ता के रूप में अनुभव करना होता है। उसमें आप इस बाह्य जगत् के समस्त नाम और रूपों को सदा के लिए त्याग देते हैं। आप नाम और रूप से अतीत चले जाते हैं और अरूप, निराकार परम सत्ता पर ध्यान करते हैं।

कुछ वेदान्ती ध्यान के लिए एक भिन्न ढंग अपनाते हैं जिसमें वे परब्रह्म के ऊपर इतना ध्यान नहीं करते अपितु अपने अन्तरतम, निजात्मा का परम सत्ता के रूप में ध्यान करते हैं। ''मैं यह देह नहीं हूँ, मन नहीं, इन्द्रियाँ नहीं, न ही मैं यह बुद्धि हूँ। यह नाम-रूप वाला व्यक्ति मैं नहीं हूँ। मैं अनन्त, अजन्मा, अजर-अमर आत्मा हूँ। मैं सर्वव्यापी परम सत्ता हूँ।'' वे उपनिषदों में जैसे वर्णित है, उस प्रकार परब्रह्म पर ध्यान नहीं करते अपितु अन्तरतम स्थित निजात्मा का, शाश्वत परम सत्ता से अभिन्न रूप में ध्यान करते हैं। वे अपने अलग व्यक्तित्व को मिथ्या जानते हुए उसे अस्वीकार करते हैं।

वे मनुष्य के इस छोटे 'मैं' के व्यक्तित्व की तुलना स्वप्न से करते हैं। जब आप निद्रा से जग जाते हैं, तो आप, जो स्वप्न में 'आप' थे वह लुप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार, वे उद्घोषणा करते हैं कि आपकी चेतना की जो यह वर्तमान अवस्था है यह केवल एक अस्थायी आभास मात्र है, और जब आप वास्तविक चेतना में जाग्रत हो जाते हैं, तो उसी क्षण आपको यह ज्ञान हो जाता है कि इस छोटी 'मैं' का अस्तित्व ही नहीं है। 'मैं'-पन के अस्तित्व की वैधता को अस्वीकार करते हुए और असीम शाश्वत सत्ता के रूप में स्वयं पर ध्यान करते हुए, वे एकमेव शुद्ध चैतन्य में प्रवेश पाने की आकांक्षा करते हैं।

ध्याता का ऐसी गतिविधियों से दूर रहना आवश्यक है जो उसे ध्यान से भटकाने वाली हों, साथ ही नकारात्मक भावनाओं से दूर रहते हुए अन्तरमन को प्रशान्त बनाये रखना उसके लिए अनिवार्य है। बाह्य घटना-परिस्थिति जैसे चल रही हो, वह उससे प्रभावित न हो कर वैसे ही चलती रहने देता है। वह दार्शनिक मानसिकता अपना लेता है और संसार की दशा से स्वयं को बहुत अधिक विचलित नहीं होने देता। संसार के लिए यह आवश्यक नहीं है कि जैसा हम चाहते हैं, वह वैसा ही हो जाये। हमारे आने से पहले यह था, हमारे जाने के बाद भी यह चलता रहता है और यह हमारा किंचित् भी देनदार नहीं है। यह जैसा भी है, हम इसे उसी तरह से स्वीकार कर लें और बिना कोई आसक्ति रखे संसार में अपना जीवन जीयें।

इसका तात्पर्य संसार में दूसरों के उन दु:खों, जिनका हमें पता चल जाता है, के प्रति सहानुभूतिविहीन हो जाना नहीं है, अपितु इसका अर्थ उन बातों से विचलित न होना है जिन्हें हम परिवर्तित नहीं कर सकते। हमारा प्रयोजन उनसे है जो हमारे तात्कालिक दायित्व एवं कर्तव्य हैं, तब हम उन कार्यों को परिस्थिति के अनुसार यथायोग्य रूप से करते हैं और फिर उनको विस्मृत कर देते हैं। हमें यह समझना होगा कि अनासक्त रहते हुए परिस्थिति के अनुसार कैसे उचित कार्य सम्पन्न करना है। हमें स्थिर रहना और यह समझ लेना अनिवार्य है कि यह भगवान् की सृष्टि है और उनका अपने इस जगत् से सीधा सम्बन्ध है। इसको कैसे चलाना है, यह वे हमसे बहुत अधिक भलीभाँति जानते हैं।

अतः इसके प्रति पूर्णतया जागरूक रह कर कि अन्ततः केवल भगवान् ही इस जगत् के संचालक एवं नियन्ता हैं, स्वयं को वस्तु-परिस्थितियों से अत्यधिक विचलित न होने दें। लोगों और परिस्थितियों के प्रति अपने मन में किसी प्रकार की नकारात्मकता को स्थान न बनाने दें तथा अन्तरमन की शान्ति को स्पर्श न करने दें। ऐसे अनावश्यक विकर्षण, जिनसे बचा जा सकता है, अपने जीवन में उनसे दूरी बनाये रखें। साथ ही, ऐसे लोग जो आपके मन में अशान्ति उत्पन्न करते हों, उनकी संगति से दूर ही रहें। भगवान् ने आपको जो सहज-बुद्धि दी है, उसका उपयोग करें। एक बुद्धिमान् व्यक्ति की भाँति ऐसी परिस्थितियों से दूर ही रहें जो आपके मन को बिना किसी कारण के अशान्त करती हों। अपने जीवन में वह तत्त्व लाने का प्रयत्न करते रहें जो मन को स्थिरता प्रदान करते हैं जैसे—तटस्थता, अनासक्ति, विवेक, सन्तोष, अभावहीनता, इच्छाओं पर नियन्त्रण तथा भगवद्-इच्छा के प्रति समर्पण। मन को विचलित करने वाली घटना-परिस्थितियों के मध्य, पृष्ठभूमि में मन को किसी अच्छे विचार के साथ जोड़ कर रखें और उसे पकड़े रखें।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

दीर्घ काल तक श्रम करने के बाद मन थक जाता है, इसलिए यह आत्मा नहीं हो सकता। आत्मा अनन्त शक्तियों का भण्डार है। मन तो केवल आत्मा का ही करण मात्र है। उसको भली-भाँति अनुशासित बना लेना चाहिए। जैसे विविध शारीरिक व्यायामों के द्वारा इस स्थूल शरीर को विकसित करते हैं उसी प्रकार मानसिक प्रशिक्षण, मानसिक अभ्यास अथवा मानसिक व्यायाम के द्वारा मन को प्रशिक्षित करना होता है। ध्यान और धारणा के अभ्यास में आपको मन को नाना प्रकार के उपायों से प्रशिक्षित करना होगा। तभी यह स्थूल मन सूक्ष्म बन सकेगा।

लोहे की एक शलाका जलती हुई भट्ठी में रखें। यह आग के समान लाल हो जायेगी। हटा लेंगे तो इसका लाल रंग जाता रहेगा। यदि आप इसे सदा लाल रखना चाहते हैं तो इसे हमेशा अग्नि में रखे रहें। इसी प्रकार यदि आप मन को ब्रह्म-ज्ञान से परिपूर्ण रखना चाहते हैं तो इसे निरन्तर और गहन ध्यान के द्वारा ब्रह्म-ज्ञान की अग्नि में रखना होगा। ब्रह्म-चेतना का अविरल प्रवाह सदा बहता रहने दें। तब आपको सहजावस्था प्राप्त होगी।

स्वामी शिवानन्द

आध्यात्मिकता का सत्य-स्वरूप :

सम्पूर्ण भगवद्-प्रेम

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

महर्षि पतंजलि के अनुसार भगवद्-प्रेम के तीन चरण हैं—प्राथमिक, मध्यम तथा उत्तम। उत्तम भगवद्-प्रेम ही अन्त में विजयी होता है, मध्यम अथवा प्राथमिक नहीं। लगभग प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति के अन्दर भगवद्-प्रेम प्राथमिक रूप में निहित होता है, तथा यह भावना भगवद्-सत्ता को परम वास्तविकता के रूप में ग्रहण करती है, साथ ही, यह संसार तथा लोगों की वास्तविकता को भी ग्रहण करती है। जब संसार, मानव-समाज तथा वस्तुओं के प्रति समान प्राधान्यता दी जाती है, तब भगवद्-प्रेम अत्यन्त कम हो जाता है। ऐसा इसीलिए है क्योंकि मन का एक भाग भगवद्-सत्ता में विश्वास रखता है तथा यह अनुभव करता है कि भगवान् से प्रेम करना उचित है, जबकि मन का दूसरा भाग संसार की ओर जाता है तथा यह अनुभव करता है कि संसार को प्रेम करना भी उचित है तथा संसार में कुछ अनमोल भी है। एक भाग ऐसा भी है जो मानवीय, व्यक्तिगत तथा सामाजिक आदि मूल्यों के लिए कार्य करता है। जिस प्रकार जल-धारा विभिन्न धाराओं में विभक्त हो जाती है, मन विभिन्न धाराओं में विभक्त हो जाता है—एक धारा भगवद्-चिन्तन करती हुई, तथा अन्य धाराएँ अन्यत्र जाती हुई। इसका तात्पर्य है कि यद्यपि व्यक्तित्व का कुछ भाग ही भगवान् के लिए समर्पित होता है, सम्पूर्ण व्यक्तित्व नहीं। हमने भगवान् को एक तिहाई मन दिया है, कभी-कभी उससे भी कम। परन्तु योग के अनुसार यह सफल नहीं होगा।

कभी-कभी संसार में हमारे अनुभव हममें पूर्णतया पृथक् भाव जाग्रत करते हैं : पदार्थ जैसा प्रतीत होते हैं, उनकी वास्तविकता वह नहीं है। वे दैनिक क्रियाकलापों के कार्यरूप से भिन्न प्रतीत होते हैं। यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि संसार तथा लोग ठीक हैं, परन्तु वे कुछ अवधि के लिए ही ठीक प्रतीत होते हैं, हर समय नहीं। यह तथ्य हमारे मन में विभिन्न अनुभवों, जैसे हताश होने अथवा हार जाने पर यदा-कदा प्रविष्ट होता है, जो आरम्भ में पदार्थों के प्रति अनुभव की गयी अभिरुचि को अप्रसन्नता में परिवर्तित कर देता है। हम एक ऐसे मित्र के प्रति भी अप्रसन्नता प्रकट कर सकते हैं जिसे हम अन्तरंग समझते थे। यह अप्रसन्नता, जो एक न एक दिन प्रत्येक व्यक्ति के मन में अवश्य आयेगी, वह संसार तथा लोगों के प्रति हमारी भावनाओं को झकझोर देगी। उस समय बाह्य रूप में अन्यत्र मार्ग पर अग्रसर भावनाएँ स्वयं को समेट लेंगी तथा पूर्णतया पृथक् गतिशीलता हेतु तत्पर तथा तीव्र हो जायेंगी।

हमारे मन की यह अत्यन्त विचित्र स्थिति है, कि भावनाएँ छिद्र में बैठे मेंढकों की भाँति शीतस्वाप, निष्क्रिय हो सकती हैं—न नि:सृत होती हुई, न भीतर गतिशील होती हुई। जब हम अपने उद्देश्यों में पराजित तथा सांसारिक पदार्थों के प्रति निराश हो जाते हैं, तब संसार के प्रति हमारी भावनाएँ स्वयं को समेट लेती हैं। हम संसार को प्रेम नहीं कर पाते, क्योंकि इसने हमें धोखा दिया है। तब, उन भावनाओं का क्या हुआ जो संसार को अत्यन्त मूल्यवान् मान रही थीं? ये भावनाएँ अपने स्रोत को वापिस लौट आती हैं, मानो किसी नदी का बहाव उसकी मुख्य धारा की ओर लौटा दिया गया हो।

स्वयं को विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित करने वाली धारा को पीछे हटाना केवल अन्त:-शक्ति को बढ़ाता है, परन्तु उसे अपेक्षित दिशा में नहीं भेजता। नि:सन्देह, यहाँ भावनाएँ तीव्र हो जाती हैं। वे पूर्व से भी अधिक बलशाली हो जाती हैं, तथा उन्हें निजी अभिव्यक्ति के लिए मार्ग ढूँढ़ना पड़ता है। मार्ग न मिलने के कारण वे भीतर ही भीतर संघर्ष करती हैं तथा बाहर जाने का मार्ग ढूँढ़ना आरम्भ करती हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारी भावना, जो अप्रत्यक्ष है, उसके लिए और अधिक बलशाली हो जाती है, यद्यपि हमें यह ज्ञात नहीं होता कि वह क्या है; तथा जो दबाव उस भावना को अपने स्रोत तक ले गया है, अधिक देर तक रहता है, वह अपने प्रतिबन्ध हटाकर कदाचित् भगवदोन्मुखी हो सकता है।

मन में भगवद्-प्रेम किस प्रकार जाग्रत होता है, यह कहना कठिन है। इसके अनेक मार्ग हैं। महान् दार्शनिक भी सन्तोषजनक रूप से नहीं बता सकते कि व्यक्ति के मन में भगवद्-प्रेम किस प्रकार जाग्रत होता है। कभी-कभी, ये दिव्य भावनाएँ जीवन में मूढ़ता तथा अर्थहीन प्रतीत होने वाली भावनाओं द्वारा भी जाग्रत होती हैं। हमारी इच्छा के विरुद्ध कहा गया एक शब्द भी संसार में हमें सबसे विमुख करने के लिए पर्याप्त है। यद्यपि, दिखने में यह छोटी-सी बात प्रतीत होती है, परन्तु यह सीमा-निर्धारक है। ऊँट बहुत बोझ उठा सकता है, उसकी पीठ आसानी से नहीं थकती। परन्तु, जब उस पर अधिकतम भार रख दिया जाता है, तो कहा जाता है कि उस बोझ को तृण-भर भी बढ़ा दिया जाये, तो वह उसे थका देता है। तृण-भर बढ़ाया गया भार ऊँट की पीठ कैसे थका सकता है? क्योंकि उससे अधिक बोझ वह न सह सका। इसी प्रकार, संसार में छोटी से छोटी घटना भी, कहा गया एक शब्द भी हमें पूर्णतया पराजित कर सकता है, क्योंकि वह अन्तिम अपेक्षित बात थी जो घटित हुई। यद्यपि, अन्त: स्तर पर हम इसके लिए तैयार थे, परन्तु चेतन अवस्था में नहीं, क्योंकि संसार में दु:ख के लिए कोई तत्पर नहीं होता।

कभी-कभी हताशा भी लोगों को भगवदोन्मुखी कर देती है। यद्यपि यह सामान्य बात नहीं है, फिर भी असम्भव नहीं है। हानि, वियोग, विनाश तथा सब ओर से निराशा की भावना भी व्यक्ति को भगवान् की ओर ले जा सकती है। और जब भगवान् हमें बुलाते हैं, तो वे ऐसी विनाशकारी स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसा नहीं है कि वे हमें सदैव मुस्कराकर पुकारेंगे। क्रोध में वे अपघर्षण करके अपनी ओर खींचने पर विवश कर सकते हैं। भगवान् के कार्य करने का एक मार्ग ऐसा भी है।

अनेक बार, हमें भगवदोन्मुखी होने के लिए इस प्रकार के उपायों की आवश्यकता होती है क्योंकि हम अच्छी सलाह कभी नहीं सुनते। ''मेरे प्रिय मित्र, इस संसार में क्या है? तुम्हें भगवान् से प्रेम करना चाहिए तथा दिन-भर भगवद्-ध्यान करना चाहिए।'' यह अच्छी सलाह है, परन्तु इस पर कौन ध्यान देगा? हम कहेंगे, ''यह व्यक्ति कुछ मूर्खतापूर्ण बात कह रहा है। हम यह सब पहले अनेक बार सुन चुके हैं।'' इसके बाद छड़ी की बारी आती है। भगवान् की छड़ी इस संसार में सभी उपयोगी वस्तुओं का विनाश कर देती है। सब-कुछ नष्ट हो जाता है—पिता, माता, भ्राता, भगिनी, पति, पत्नी, चाहे जो भी हो। भगवान् यह नहीं देखते कि हमें क्या प्रिय है। भगवान् का क्रोध समुद्र में प्रलय की भाँति आ सकता है, जो सब-कुछ नष्ट कर देता है, तथा वे यह नहीं देखते कि हमारी भावनाएँ क्या हैं।

(क्रमश:)

(अनुवादिका : मेधा सचदेव)

मानव से ईश–मानव :

अन्तिम दिन

श्री एन. अनन्तनारायणन्

(पूर्व–अंक से आगे)

१३ जुलाई को स्वामी जी ने अपना नाश्ता पूरा नहीं लिया, वे बस केवल एक इडली, थोड़ा सा आम का रस और दूध ले कर ही सन्तुष्ट हो गये। १० बजे उन्हें नित्य की भाँति बाहर दालान में ले आया गया। प्रायः वहाँ वे लगभग आधे घण्टे तक बैठा करते थे; किन्तु उस दिन केवल दश मिनट ही बैठे और निरन्तर गंगाजी की ओर एकटक देखते रह कर अचानक ही कहा, ''ठीक है, भीतर चलें।'' उन्हें भीतर ले जाया गया। अपराह्न में उन्हें दस्त और अनियन्त्रित पेशाब होने लगा।

रात्रि के लगभग ९ बजे का समय था, कोई बिजली की मशीन चलायी गयी थी जिससे टर्र–टर्र की आवाज़ उत्पन्न हुई। स्वामी जी ने टिप्पणी की, ''सुना आपने, मेंढक टर्रा रहा है!'' स्वामी जी के स्वास्थ्य के कारण सभी दु:खी थे, किन्तु उनकी इस टिप्पणी को सुन सभी मुस्करा उठे।

उसी समय स्वामी जी का एक प्रिय शिष्य वहाँ आ गया। उसने कमर से ऊपर देह पर कुछ नहीं पहना हुआ था और उसका बाहर निकला हुआ उदर स्पष्ट दिखायी दे रहा था। गुरुदेव ने उसे देख लिया और विनोदपूर्वक कहा, ''ओजी, इसके पेट के ऊपर मशीन को रख दें!'' किन्तु थोड़ी ही देर में जब डॉक्टर ने उनके चेहरे पर विद्युत् मशीन से मालिश करना आरम्भ किया तो स्वामी जी थोड़े गम्भीर हो गये। अत्यन्त क्लान्त और थकान से युक्त हो उन्होंने कहा, ''बस, बस।'' उस समय उनके व्यवहार से अत्यधिक विरक्ति झलक रही थी। वे कुछ नहीं चाहते थे। अन्ततः जब उनका बुलावा आ चुका था तो उस समय संसार–भर के समस्त चिकित्सक भी क्या कर सकते थे?

बहुत से दस्त और अबाध रूप से पेशाब होने के बाद स्वामी जी का उदर बिलकुल रिक्त हो गया था। नन्हे बालक के समान वे शैया पर आराम से लेट कर दाहिने हाथ की उँगलियों से अपना सिरहाना धीरे–धीरे थपथपाने लगते, या फिर दाहिनी हथेली को कोमलता से उदर पर घुमाने लगते थे। अब उनके लिए कुछ करना शेष नहीं था। उनका कार्य पूर्ण हो चुका था।

१४ जुलाई को कर्नल पुरी गुरुदेव के स्वास्थ्य का निरीक्षण करने के लिए आये। जब उन्होंने स्वामी जी की प्रतिक्रिया–परीक्षण हेतु उन्हें डण्डे से थपथपाया तो स्वामी जी बोले, ''डॉक्टर बहुत निर्मम होते हैं।'' डॉक्टर ने कहा, ''जी हाँ स्वामी जी, क्या करें? यह हमारा

कर्तव्य है'', फिर कहा, ''स्वामी जी, आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे।'' ''हाँ, अवश्य, मुझे अभी बहुत से कार्य करने हैं।'' ''आप करेंगे, स्वामी जी; किन्तु कुछ असुविधा के साथ।'' गुरुदेव ने चिकित्सक के शब्द स्पष्टतया सुने और उनकी ओर ध्यानपूर्वक देखा। और फिर स्वागत-सत्कार में कभी भी चूक न करने वाले गुरुदेव ने यह भी देखा कि डॉक्टर को उपमा, कॉफी और पुस्तकें दे दी गयी हैं, तब स्वामी जी ने उन्हें '**ॐ नमो नारायणाय**' के साथ मधुर विदाई दी।

डॉक्टर के जाने के उपरान्त और अपना भोजन करने से पहले ही स्वामी जी को कँपकँपी और ज्वर आरम्भ हो गया। श्वास में कठिनाई होने लगी। स्वामी जी ने दो-तीन चम्मच हॉरलिक्स के लिये, और अपराह्न तीन बजे के लगभग पानी माँगा। शिष्य जैसे सदा ही किया करते थे, उसी तरह जौ का पानी या जीरे का पानी देना चाहा; किन्तु गुरुदेव ने शुद्ध गंगाजल लेने की इच्छा व्यक्त की। गंगाजल लाया गया। और स्वामी जी ने, जिन्हें छोटी-सी घूँट पीने में इतनी कठिनाई थी, आधा गिलास गंगाजल अत्यन्त सहजता से, बिना किसी कठिनाई से पी लिया...और इसके साथ ही वह परमात्मा, जो स्वामी शिवानन्द थे, ने अपनी नश्वर देह त्याग दी। इस समय रात्रि के ११.१५ बजे थे।

गुरुदेव ने परमात्मा में लीन होने का जो समय चयन किया, वह परम शुभता का पावन मुहूर्त था। यह दक्षिणायन के प्रारम्भ होने से एकदम पहले उत्तरायरण[१] की अन्तिम सीमा का वह क्षण था जिसमें ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति अत्यन्त श्रेष्ठ थी। समय-गणना में एक अत्यन्त कुशल व्यक्ति, जो ज्योतिष विद्या का भी श्रेष्ठ ज्ञाता था, ने उसी रविवार के दिन प्रातः बताया था कि लगभग अर्धरात्रि के समय ग्रह-नक्षत्रों का एक ऐसा अद्वितीय एवं शुभ संयोग बनेगा जिसे कोई भी योगी जो देह-त्यागने का इच्छुक होगा, वह उसे कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा। उसकी भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई और गुरुदेव ने वही सुसंयोग चयन कर लिया।

अन्त इतना अप्रत्याशित और अचानक हुआ कि कुछ समय के लिए शिष्य स्तब्ध एवं किंकर्तव्यविमूढ़ रह गये। वे समझते थे कि उनके गुरुदेव चले गये हैं, किन्तु हृदय को विश्वास दिलाना कठिन था। मन इसे समझने को अस्वीकार कर रहा था। प्रतीत हो रहा था मानो समय का ही अन्त हो गया है। किन्तु इस स्तम्भित कर देने वाली घटना का बाह्य जगत् के साथ सम्बन्ध के अर्थ के बोध ने धीरे-धीरे किंकर्तव्यविमूढ़ता से उबारा और तब तत्काल ही दूरभाष और तार के माध्यम से सभी ओर सन्देश भेज दिये गये।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

उत्तरायण मध्य जनवरी से मध्य जुलाई तक का समय है। अन्य छह मास का समय दक्षिणायन कहलाता है।
उत्तरायण काल भौतिक देह को त्यागने के लिए उत्तम माना जाता है (देखिए—गीता, अध्याय ८, श्लोक २३-२७)।

शिवानन्द ज्ञानकोष :

जीवन्मुक्त

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

(पूर्व-अंक से आगे)

जिस प्रकार हींग या प्याज के बर्तन को कितनी बार भी साफ किया जाये तो भी उसमें गन्ध रह ही जाती है, उसी प्रकार ज्ञानी के मन में भी अज्ञान लेशमात्र रह ही जाता है। जीवन्मुक्त को शरीर का ज्ञान (चेतना) केवल संस्कार के रूप में रहता है। यही कारण है कि वह खाता और पीता है। यद्यपि जीवन्मुक्त में निम्न इच्छाओं वाले अशुद्ध मन का नाश हो जाता है किन्तु सात्त्विक मन नष्ट नहीं होता। उपकरण अर्थात् मन के बिना वह सांसारिक व्यवहार कैसे कर सकता है?

सांसारिक जीव और जीवन्मुक्त में अन्तर

जीवन्मुक्त की दृष्टि से यह व्यावहारिक जगत् ओझल नहीं होता। जीवन्मुक्त संसार को स्वप्न की भाँति अपने अन्दर ही देखता है। जल की मायावी स्थिति से अवगत होने पर भी जिस प्रकार मृगतृष्णा की प्रतीति होती रहती है, उसी प्रकार आत्म-साक्षात्कार कर लेने के उपरान्त संसार के मायावी स्वरूप से स्पष्टतया अवगत हो जाने पर भी जीवन्मुक्त को संसार की प्रतीति होती रहती है। किन्तु जिस प्रकार मृगतृष्णा के स्वरूप को स्पष्ट रूप से जान लेने के बाद व्यक्ति जल पीने के लिए मृगतृष्णा की ओर नहीं भागता, उसी प्रकार जीवन्मुक्त संसार के दृष्टिगोचर रहने पर भी संसारी जीवों की भाँति विषय-पदार्थों के पीछे नहीं भागता। यही अन्तर है संसारी जीव और जीवन्मुक्त में।

जीवन्मुक्त जब ब्रह्म, जो कि महिमाओं की महिमा है, आत्माओं की आत्मा है—में निमग्न हो जाता है तो लोक-व्यवहार नहीं कर सकता। परन्तु प्रारब्ध और विक्षेप-शक्ति के प्राबल्य से वह ब्रह्म-चेतना से नीचे उतरता है तो दुःखी जीवों की पुकार सुन कर उन पर प्रेम-वर्षा करता है। ऐसा ज्ञानमय और करुणामय है वह। वह दया, प्रेम और शान्ति का सागर है, वह एक बुद्ध या ईसामसीह है।

सार्वभौमिक दृष्टिकोण (विराट् दर्शन)

जीवन्मुक्त सभी पदार्थों में और सर्वत्र एक ही परम सत्ता अथवा ईश्वर के दर्शन करता है। एक दुष्ट और सन्त में, स्वर्ण और पत्थर में, आदर और अनादर में उसके लिए कोई अन्तर नहीं होता। वास्तव में वह यह अनुभव करता है कि सब-कुछ वही है। साँप, बिच्छू, बाघ, रीछ और सिंह उसके उसी प्रकार से अंग हैं जिस प्रकार से उसके अपने हाथ, पैर, नाक, कान और आँखें हैं। वह आकाश, सूर्य, समुद्र, पर्वत और पुष्प आदि सभी से अभिन्नता अनुभव करता है। वह विराट् दर्शन और विराट् भावनाओं से युक्त होता है।

समाधि ज्ञानी और व्यावहारिक ज्ञानी

जीवन्मुक्तों के व्यावहारिक जीवन में भिन्नता रहती है। एक महात्मा राजसी वैभव में जीवन व्यतीत करता है। राजा भगीरथ ने ऐसा ही जीवन व्यतीत किया। दूसरा ज्ञानी भिक्षुक की तरह रहता है। कोई ज्ञानी सदा ध्यानस्थ रहता है। वह कर्म में रत नहीं होता। वह सम्भाषण नहीं करता। वह सदैव एकान्त में रहता है। जड़भरत ने इस प्रकार का जीवन व्यतीत किया। अन्य महात्मा भीड़-भाड़ से युक्त नगर में वास करता है। वह लोकसंग्रह में निमग्न रहता है। वह लोगों से वार्तालाप करता है। वह प्रवचन करता है, आध्यात्मिक सम्मेलनों का आयोजन करता है, ग्रन्थ-रचना आदि कार्य करता है। श्री शंकराचार्य जी ने ऐसा जीवन व्यतीत किया। इस भिन्नता का कारण प्रारब्ध है। प्रत्येक महात्मा का अपना प्रारब्ध होता है। यदि समस्त महात्माओं अथवा ज्ञानियों का एक सा प्रारब्ध और एक सा जीवन हो जाये तो जगत् एक कारागृह-तुल्य हो जायेगा। जगत् में विविधता प्रकृति का स्वभाव है।

जो ज्ञानी सांसारिक क्रिया-कलापों का इच्छुक है अथवा संसार में व्यवहाररत रहता है, वह व्यावहारिक ज्ञानी है। जो ज्ञानी अपने-आपको जगत्-व्यवहार से नितान्त मुक्त रखता है, वह समाधि ज्ञानी है।

(क्रमशः)

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

बाल जगत्

निःस्वार्थ सेवा

प्रिय अमृत पुत्रो!

मानव-जाति की निष्काम्य सेवा करना कर्मयोग है। आसक्ति अथवा अभिमान से मुक्त हो कर मानव-जाति की सेवा करना ही कर्मयोग की विशेषता है। कर्मों में अनासक्ति ही गीता का केन्द्रीय उपदेश है। भगवान् कृष्ण कहते हैं—''कर्मों में निरत रहो। तुम्हारा कर्तव्य काम करने में ही है, उसके फल की अपेक्षा में नहीं।''

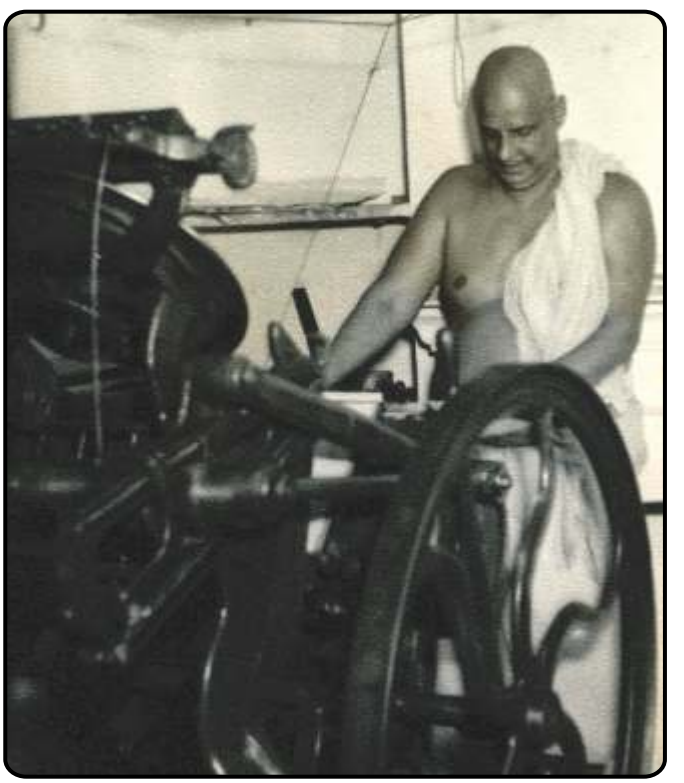

मन का निर्माण इस प्रकार हुआ है कि बिना फलों की अपेक्षा के अथवा पुरस्कार के एवं प्रशंसा की कामना के यह कोई कार्य नहीं कर सकता। आपको मन को प्रशिक्षित करना होगा जिससे यह निष्काम्य रूप से कर्म करे। सांसारिक लोग निष्काम्य कर्मयोग को नहीं समझ सकते, क्योंकि उनके मन अनेक दुर्गुणों से भरे होते हैं। कुछ समय के लिए अथक सेवा-कार्य कीजिए। तब आप निष्काम्य सेवा के रहस्य को समझ जायेंगे।

कर्मयोगी को लोभ, काम, क्रोध

तथा अभिमान से पूर्णत: मुक्त होना चाहिए। तभी वह वास्तविक सेवा-कार्य कर सकेगा। यदि इन दोषों के लेशमात्र भी हों तो वह एक-एक कर उन्हें दूर करने के लिए प्रयत्नशील बने।

स्वामी शिवानन्द

सद्गुणों का अर्जन

सौम्यता (Gentleness)

सौम्यता स्वभाव तथा आचार में मृदु, नम्र एवं शिष्ट होने का गुण अथवा अवस्था है।

यह भाव की कोमलता है। यह प्रेम तथा सम्मान है। यह सहानुभूति है।

एक सौम्य मनुष्य सुशील, शान्त तथा शिष्ट होता है। वह विनम्र आचरणयुक्त होता है। वह कठोरता तथा अभद्रता से मुक्त होता है। वह मधुर तथा मृदु स्वभाव का होता है।

यदि एक मनुष्य सौम्य है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कमजोर अथवा असमर्थ है। केवल शक्तिशाली मनुष्य ही वास्तव में सौम्य हो सकता है। सौम्यता के समान शक्तिशाली कोई नहीं है। अभद्र अथवा कठोर होना दुर्बलता, अज्ञान, अशिष्टता तथा अनुभवहीनता का लक्षण है।

स्वामी शिवानन्द

दुर्गुणों का नाश

द्यूतक्रीड़ा-जुआ खेलना (Gambling)

द्यूतक्रीड़ा एक अन्य भयंकर दुर्गुण है। यह शैतान की परम मित्र है अर्थात् भगवान् की विरोधी है। यह आकर्षित, प्रलोभित एवं मोहित करती है। प्रथम दाव में थोड़ा सा लाभ द्यूतक्रीड़ा करने वालों को उत्प्रेरित करता है तथा उन्हें एक बड़ी धनराशि दाव पर लगाने हेतु विवश करता है। अन्तत: वे अपना सब कुछ खो कर रोते हुए घर लौटते हैं। द्यूतक्रीड़ा एवं मद्यपान में बहुत बड़ी धनराशि व्यर्थ गँवा दी जाती है। द्यूतक्रीड़ा में आसक्त व्यक्ति के हृदय में

कोई सद्गुण नहीं रह सकता है।

हे मानव! मनुष्य-जन्म प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। यह जीवन भगवद्-साक्षात्कार हेतु प्राप्त हुआ है। अक्षय एवं शाश्वत आनन्द भगवान् में ही है। इस बहुमूल्य जीवन को मद्यपान, द्यूतक्रीड़ा, धूम्रपान एवं मांसाहार करने में व्यर्थ मत गँवाइए।

इसी क्षण से द्यूतक्रीड़ा, मांसाहार, मदिरापान, सिनेमा एवं धूम्रपान का त्याग कर दीजिए। मुझे अभी दृढ़ वचन दीजिए। मैं आपका मित्र एवं हितैषी हूँ। जाग्रत होइए। सजग होइए। एक पवित्र-सद्गुणी व्यक्ति बनिए। सत्कर्म करिए। भगवान् के नाम का गायन करिए। भगवन्नाम समस्त बुरी आदतों के निवारण हेतु एक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली औषधि है।

स्वामी शिवानन्द

करोड़पति के पुत्र की कहानी

एक बार, एक करोड़पति मनुष्य था जिसके पास अथाह धन-सम्पत्ति थी। उसके इकलौता पुत्र था जो अभी नन्हा शिशु ही था। वह सेठ अपनी अपार सम्पदा छोड़ कर चल बसा और इस प्रकार वह नन्हा बालक लगभग एक वर्ष की छोटी सी आयु में ही करोड़पति हो गया और उस अपार धन-दौलत का मालिक बन गया। उसे अब और किसी भी वस्तु-पदार्थ की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि समस्त ऐश्वर्य को भोगने वाला केवल एक वह ही तो था। यह उसकी वास्तविक स्थिति थी।

किन्तु व्यावहारिक रूप से वस्तुस्थिति क्या थी? चलिए इसे देखते हैं। यद्यपि यह सत्य है कि वह बालक करोड़पति था, तथापि वह बालक अपने करोड़पति होने के ऐश्वर्य का उपभोग अपनी इच्छानुसार नहीं कर सकता था। इसके कई कारण थे। प्रथम यह कि अभी अवयस्क होने के कारण उत्तराधिकार सम्बन्धी कई ऐसे नियम-कानून थे जिनके अन्तर्गत वह अभी उत्तराधिकारी के पद का उपभोग नहीं कर सकता था। उस सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति और उसके एकाधिकार का पद पाने के लिए उसका वयस्क होना अनिवार्य था। और नियमानुसार वयस्क होने तक उसे अपने अभिभावक के नियन्त्रण में रहना पड़ेगा। अतः उसे अपनी छोटी से छोटी इच्छापूर्ति के लिए पहले अपने

अभिभावक को प्रसन्न करना होगा। द्वितीय यह कि उसके पिता ने पुत्र को १८ अथवा २१ वर्ष की आयु में अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त करने के लिए कई नियम और भी निर्धारित किये हुए थे जिनका पालन करना पुत्र के लिए आवश्यक था और जिनका पालन करने में असफल होने से वह उस अधिकार को प्राप्त करने से वंचित हो सकता था।

उदाहरण के लिए हम मान लेते हैं कि पिता ने उत्तराधिकार की वसीयत में लिख दिया हो कि उसके पुत्र को सम्पूर्ण धन-सम्पदा का उत्तराधिकार तभी दिया जाये, जब कि वह धूम्रपान, मद्यपान, द्यूत-क्रीड़ा इत्यादि निन्दनीय कार्यों में प्रवृत्त न हो, परिवार के नाम को कलंकित करने वाला किसी भी प्रकार का कार्य न करे इत्यादि इत्यादि। इस प्रकार हमने देखा कि यद्यपि यह पूर्णतया सत्य है कि वह बालक करोड़पति है, इस सत्य को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता और न ही इस यथार्थ को कोई परिवर्तित कर सकता है, तथापि यदि वह बालक वयस्क होने तक समस्त निर्धारित शर्तों को पूर्ण नहीं करता तो करोड़पति होने के इस सत्य के होते हुए भी वह अपनी वर्तमान सीमाओं से मुक्त नहीं हो सकता, न ही वह अभावों से छूट कर करोड़पति होने का सुख भोग सकता है। यदि वह उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता है जिसमें उसे किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहेगा, तो उसे धैर्यपूर्वक उस अवस्था तक पहुँचने की प्रतीक्षा करनी होगी तथा उन समस्त योग्यताओं को भी प्राप्त करना होगा जो उसके पिता ने और कानून ने निर्धारित की हुई हैं। केवल तब ही अन्ततोगत्वा उसे अपनी पूर्ण सम्पन्नता, सक्षमता और सामर्थ्य की अवस्था की प्राप्ति होगी।

किन्तु यदि वह ऐसा होने से पहले ही अपनी उस अवस्था की सामर्थ्य का उपयोग करने का प्रयास करेगा तो उसे सफलता नहीं मिलेगी। उदाहरण के लिए यदि वह दश लाख की मोटर गाड़ी लेने के लिए आज्ञा करेगा तो गाड़ी वाला मुस्करा के टाल देगा, मोटर गाड़ी नहीं देगा। उसका अभिभावक उसके लिए जो चाहे वह क्रय करके दे सकता है, किन्तु अवयस्क बालक ऐसा नहीं कर सकता।

इसी प्रकार यद्यपि आप वास्तव में सत् चित् आनन्द स्वरूप हैं, किन्तु इसका अनुभव प्राप्त करने के लिए आपको सभी योग्यताओं (यथा—सद्गुणों का विकास और दुर्गुणों का त्याग इत्यादि) को प्राप्त करना होगा तथा समस्त साधनाओं जैसे एकाग्रता, ध्यान इत्यादि का अभ्यास करना होगा।

स्वामी शिवानन्द

मुख्यालय आश्रम में मकर संक्रान्ति को परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के संन्यास दीक्षा दिवस का महोत्सव

द डिवाइन लाइफ सोसायटी के इतिहास में मकर संक्रान्ति का दिवस विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि परम पावन सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने १९३६ के इस पावन दिवस को द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी की स्थापना की थी। १९४६ को इसी दिन परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज को सद्गुरुदेव से संन्यास दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

मुख्यालय आश्रम द्वारा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के एक कार्यक्रम के रूप में, उनका संन्यास दीक्षा दिवस १४ जनवरी २०२२, मकर संक्रान्ति को मनाया गया। आश्रम द्वारा जन्म शताब्दी के एक भाग के रूप में इसी दिन से '१०० दिवसीय महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ' प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया था। इसके लिए विभिन्न शाखाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी की दृष्टि से सभी शाखाओं को आमन्त्रित भी किया जाना था,

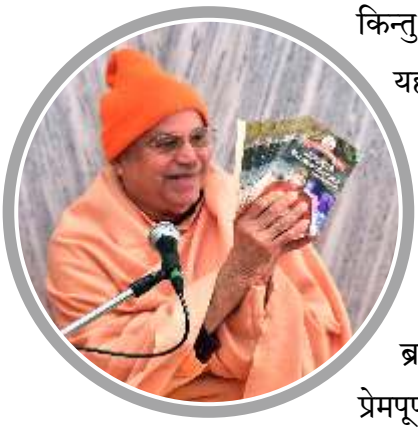

किन्तु कोविड-१९ महामारी की तीसरी लहर के अचानक आ जाने के कारण यह सम्भव नहीं हो पाया।

तथापि मकर संक्रान्ति के पावन दिवस पर पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज का संन्यास दीक्षा दिवस अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास सहित मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ समाधि मन्दिर में विशेष पादुका पूजा के साथ हुआ जिसमें आश्रम के संन्यासी, ब्रह्मचारी, साधक और भक्त सभी पूज्य स्वामी जी महाराज के प्रति अपने प्रेमपूर्ण श्रद्धा-सुमन समर्पित करने के लिए अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। इसके उपरान्त भजन-कीर्तन हुआ। इस पावन दिवस के उपलक्ष्य में 'स्वामी कृष्णानन्द जन्म शताब्दी शृंखला' के अन्तर्गत पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की दो पुस्तिकाएँ, 'सन—द आई ऑफ़ द वर्ल्ड' तथा 'मोक्ष—द फाइनल लिबरेशन' भी विमोचित की गयीं।

सायं ४ बजे आश्रम के अन्तेवासी दिव्य महामन्त्र संकीर्तन हेतु भजन हाल में पुनः एकत्रित हुए। प्रसन्नतापूर्ण हृदयों से विविध वाद्य यन्त्रों के सहयोग से अत्यन्त मधुर स्वर में विभिन्न धुनों पर उन्होंने सायं छह बजे तक संकीर्तन किया। रात्रि सत्संग में भी नियमित नित्य प्रार्थनाओं के उपरान्त, सद्गुरुदेव के प्रति तथा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के प्रति श्रद्धा-सुमन के रूप में एक घण्टे तक अत्यन्त सुन्दर भजन-कीर्तन समर्पित किया गया। आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा, सद्गुरुदेव तथा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की भरपूर कृपावृष्टि सभी पर हो!

पावन स्मृति में

अत्यन्त शोक सहित हम सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से प्रत्यक्ष दीक्षित तथा डीएलएस मदुरै शाखा के पूर्वाध्यक्ष, श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के १३ जनवरी, २०२२ को तमिलनाडु के मदुरै में हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

पूर्वाश्रम में श्री टी. के. नारायण नाम से जाने जाने वाले श्री स्वामी जी का जन्म १३ जुलाई १९४० को तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले के नगरगोइल में हुआ था। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त श्री नारायण जी मदुरै अमेरिकन कॉलेज में कैमिस्ट्री के प्राध्यापक के पद पर सेवारत रहे। श्री टी. के. नारायण जी को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा पावन संन्यास परम्परा में दीक्षित होने का तथा श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती नाम प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री स्वामी जी १९६५ से ही मदुरै डीएलएस शाखा के अत्यन्त सक्रिय सदस्य रहे। वे अपनी शाखा के प्रति तथा सद्गुरुदेव की संस्था के प्रति अन्तिम श्वास तक निष्ठा सहित समर्पित सेवाएँ देते रहे। उन्होंने सद्गुरुदेव की ३० से अधिक पुस्तकों का तमिल भाषा में अनुवाद किया जो राशीपुरम डीएलएस शाखा द्वारा प्रकाशित की गयी हैं। गुरुदेव की उदात्त शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए श्री स्वामी जी ने तमिल भाषा में 'इमाया गीतम' नाम से एक पत्रिका भी प्रकाशित की। १३ जनवरी,२०२२ को श्री स्वामी जी ने ८२ वर्ष की परिपक्व आयु में अन्तिम श्वास ली।

दिवंगत आत्मा की परमपिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव के पावन चरणों में शाश्वत स्थान प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं!

पावन स्मृति में

अत्यन्त शोक सहित हम आपको डीएलएस पलक्काड शाखा, केरल के अध्यक्ष श्री स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी के २६ जनवरी, २०२२ को पलक्काड में हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

पूर्वाश्रम में श्री पी. एन. गोपालकृष्णन नाम से जाने जाने वाले श्री स्वामी जी का जन्म १९३४ में हुआ था। विज्ञान में स्नातक होने के उपरान्त श्री गोपालकृष्णन जी ने मुम्बई लॉ कालेज से एलएलबी की

डिग्री प्राप्त की। उन्होंने लोनावाला योगा कॉलेज, महाराष्ट्र से योग शिक्षा का डिप्लोमा भी प्राप्त किया। ६० के दशक के प्रारम्भ में श्री गोपालकृष्णन जी सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन आश्रम के सम्पर्क में आये। वे कुछ समय के लिए आश्रम में रहे और उन्होंने अत्यन्त समर्पित भाव से अपनी सेवाएँ दीं।

श्री गोपालकृष्णन जी १९७६ में केरल के परम पूज्य श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा पावन संन्यास परम्परा में दीक्षित किये गये तथा उन्हें श्री स्वामी नित्यानन्द सरस्वती नाम दिया गया। श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज परम पूज्य सद्गुरुदेव से प्रत्यक्ष दीक्षित थे तथा वे संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान् थे। श्री स्वामी नित्यानन्द जी २६ जनवरी, २०२२ को ८८ वर्ष की परिपक्वावस्था में अन्तिम श्वास लेने तक डीएलएस पलक्काड शाखा के अध्यक्ष के पद पर रहते हुए अपनी समर्पित सेवाएँ देते रहे।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव से हम दिवंगत आत्मा की शाश्वत शान्ति और दिव्य सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं!

डोनेशन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सूचना

प्रशासनिक कारणों तथा वर्तमान अकाउण्टिंग व्यवस्था (Accounting System) को थोड़ा सरल बनाने के उद्देश्य से, १० मार्च २०२१ को आयोजित 'बोर्ड ऑफ मैनेजमेण्ट' मीटिंग एवं ११ मार्च २०२१ को आयोजित 'बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज' मीटिंग में यह निर्णय लिया गया है कि द डिवाइन लाइफ सोसायटी के लिए भेजे जाने वाले डोनेशन दिनांक १ अप्रैल २०२१ से केवल निम्नलिखित अकाउण्टस हेड्स हेतु ही स्वीकार किये जायेंगे—

जनरल डोनेशन

(१) आश्रम जनरल डोनेशन

(२) अन्नक्षेत्र

(३) मेडिकल रिलीफ

कॉरपस डोनेशन

शिवानन्द आश्रम कॉरपस (मूलधन) फण्ड

अत: भक्तवृन्द से अनुरोध है कि वे केवल उपर्युक्त अकाउण्टस हेड्स हेतु ही डोनेशन भेजें।

आश्रम के भक्त एवं हितैषी जनों को यह भी सूचित किया जाता है कि

- 'आश्रम जनरल डोनेशन' में प्राप्त धनराशि का उपयोग द डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी गतिविधियों हेतु किया जायेगा यथा शिवानन्द होम द्वारा गृहविहीन-निराश्रितों की देखभाल, लेप्रसी रिलीफ वर्क द्वारा कुष्ठरोगियों की सेवा, निर्धन छात्रों को शैक्षिक सहायता, योग-वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी का संचालन, नि:शुल्क वितरणार्थ आध्यात्मिक पुस्तकों का मुद्रण, आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार, आश्रम-मन्दिरों में पूजा-अर्चना, आश्रम एवं गौशाला का रख-रखाव तथा आश्रम की नियमित धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों का संचालन। इस धनराशि का उपयोग सोसायटी द्वारा समय-समय पर आयोजित अन्य विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी कार्यक्रमों हेतु भी किया जायेगा।
- 'मेडिकल रिलीफ' के अन्तर्गत प्राप्त डोनेशन का उपयोग शिवानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल में जरूरतमन्द रोगियों के उपचार हेतु तथा सोसायटी द्वारा संचालित अन्य चिकित्सा-सम्बन्धी कार्यक्रमों हेतु किया जायेगा।
- इसी प्रकार 'शिवानन्द आश्रम कॉरपस (मूलधन) फण्ड' से प्राप्त ब्याज की राशि का सदुपयोग सोसायटी की समस्त गतिविधियों (धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा-सम्बन्धी) हेतु किया जायेगा।
- इस सम्बन्ध में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि सोसायटी अपनी किसी गतिविधि को समाप्त नहीं कर रही है। सोसायटी की सभी आश्रम-सम्बन्धी एवं सेवा-सम्बन्धी गतिविधियाँ पूर्ववत् चलती रहेंगी; यद्यपि डोनेशन स्वीकार करने हेतु अकाउण्टस हेड्स की संख्या कम कर दी गयी है।
- द डिवाइन लाइफ सोसायटी के लिए डोनेशन 'ऑनलाइन डोनेशन सुविधा' द्वारा वेब एड्रेस

https://donations.sivanandaonline.org के माध्यम से अथवा हमारी वेबसाइट www.sivanandaonline.org में दिये गये 'ऑनलाइन डोनेशन' लिंक के माध्यम से भेजा जा सकता है।

- डोनेशन ऋषिकेश में देय बैंकड्राफ्ट अथवा चेक अथवा इलेक्ट्रानिक मनीआर्डर (E.M.O.) द्वारा "The Divine Life Society", Shivanandanagar, Uttarakhand के नाम भी भेजा जा सकता है। कृपया ड्राफ्ट अथवा चेक अथवा ई. एम. ओ. के साथ एक पत्र में डोनेशन का उद्देश्य, अपना डाक पता, फोन नम्बर, ई मेल आई डी तथा पैन नम्बर लिख कर भेजें।
- भक्तवृन्द को यह भी सूचित किया जाता है कि आश्रम-मन्दिरों में पूजा-अर्चना करवाने हेतु कोई धनराशि नहीं ली जायेगी। जो व्यक्ति अपने अथवा अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम पर पूजा करवाना चाहते हैं, वे इस सम्बन्ध में आश्रम के महासचिव अथवा परमाध्यक्ष को आवश्यक विवरण के साथ एक अनुरोध-पत्र ई मेल अथवा डाक द्वारा भेज सकते हैं जिससे कि उनके नाम पर पूजा सम्पन्न हो सके।
- सोसायटी को भेजे जाने वाले सदस्यता शुल्क, प्रवेश शुल्क, आजीवन सदस्यता शुल्क, पैट्रनशिप शुल्क, शाखा-सम्बद्धता शुल्क एवं एस पी एल को भेजी जाने वाली अग्रिम धनराशि से सम्बन्धित प्रावधानों एवं निर्देशों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१.	नवीन सदस्यता-शुल्क*		₹ १५०/-
	प्रवेश-शुल्क	₹ ५०/-	
	सदस्यता-शुल्क	₹ १००/-	
२.	सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)		₹ १००/-
३.	नयी शाखा खोलने का शुल्क**		₹ १०००/-
	प्रवेश-शुल्क	₹ ५००/-	
	सम्बद्धता-शुल्क	₹ ५००/-	
४.	शाखा-सम्बद्धता नवीकरण शुल्क (वार्षिक)		₹ ५००/-

* सदस्यता के इच्छुक प्रार्थी कृपया प्रार्थना-पत्र के साथ अपना फोटो पहचान-पत्र (Photo Identity) तथा निवास-स्थान के प्रमाण-स्वरूप कोई दस्तावेज (Residential Proof) भेजें।

**नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

⇨ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा भेजें।

डी एल एस शाखाओं के प्रतिवेदन

भारतीय शाखाएँ

अंगुल (ओडिशा): शाखा द्वारा दिसम्बर और जनवरी मास में दैनिक सत्संग, गुरुवारों को पादुका पूजा सहित साप्ताहिक सत्संग तथा तीन चल-सत्संग किये जाते रहे।

कंटाबंजी (ओडिशा): शाखा द्वारा रविवार को ॐ के जप तथा गीता पाठ के साथ साप्ताहिक सत्संग किये जाते रहे। १४ दिसम्बर को गीता पाठ, भजन और कीर्तन इत्यादि के साथ गीता जयन्ती मनायी गयी।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गतिविधियाँ यथा त्रिसन्ध्या आरती, सायंकालीन सत्संग, सोमवार को शिवाभिषेक, शुक्रवारों को दुर्गा चालीसा, मंगलवार को हनुमान चालीसा एवं सुन्दरकाण्ड पाठ इत्यादि पूर्ववत् चलती रहीं। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती गाँवों में सत्संग, संकीर्तन, जप, यज्ञ इत्यादि के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते रहे। ८ जनवरी,२०२२ को शाखा द्वारा पूज्य श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी का २९वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस मनाया गया जिसमें मुख्यालय आश्रम से तथा अन्य स्थानों से भी सन्त पधारे।

चाँदपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग शनिवार को, गुरु पादुका पूजा गुरुवार को, सुन्दरकाण्ड पारायण संक्रान्ति दिनों को और चल सत्संग ८ और २४ को किये जाते रहे। १४ दिसम्बर को गीता यज्ञ सहित गीता जयन्ती मनायी गयी।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा २१ अक्तूबर से १९ नवम्बर तक श्री रामचरितमानस का पाठ किया गया जिसके समापन पर हनुमान चालीसा का पाठ हुआ। इसके अतिरिक्त शाखा के नियमित कार्यक्रम, यथा दैनिक पूजा, प्रत्येक गुरुवार को नियमित सत्संग, तथा मासिक जयन्ती दिवस ८ एवं २४ को पादुका पूजा और अर्चना इत्यादि किये जाते रहे। ५ और ११ नवम्बर को श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज की दिवंगत आत्मा की परम शान्ति एवं सद्गति हेतु विशेष प्रार्थनाएँ की गयीं।

डीएलएस फ़रीदपुर शाखा (उत्तर प्रदेश): १४ से १६ जनवरी तक श्री स्वामी प्रेमानन्द स्मृति महोत्सव, जो कोविड-१९ के कारण निरस्त कर दिया गया था, अब १४ से १६ जनवरी तक अयोध्या जी में मनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त प्रति माह गुरु पादुका पूजा, स्वामी प्रेमानन्द जी की पावन स्मृति में काठमांडू, सीतामढ़ी, जनकपुर धाम की दिव्य प्रेम यात्रा का आयोजन, नवरात्रि, दीपोत्सव, नारायणोत्सव का आयोजन तथा जरूरतमन्दों की सेवा इत्यादि के आयोजन शाखा द्वारा किये जाते रहे।

डीएलएस शाखा, बी एच ई एल, हरिद्वार (उत्तराखंड): शाखा द्वारा १४ से २१ अक्तूबर तक रामचरितमानस पाठ, दुर्गा सप्तशती पाठ एवं भजन-कीर्तन सहित नवरात्रि मनायी गयी, १४ दिसम्बर को गीता जयन्ती गीता के १५वें अध्याय के पाठ, प्रवचन तथा परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की गीता पर उनके विचारों की चर्चा सहित मनायी गयी।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक प्रातःकालीन प्रार्थना गीता पाठ सहित, सोमवारों को शिव अभिषेक, हनुमान चालीसा और विष्णुसहस्रनाम पारायण, गुरुवारों को साप्ताहिक सत्संग तथा शनिवारों को हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड पारायण सहित मातृ सत्संग किये जाते रहे। प्रत्येक मास की ३ को महामन्त्र कीर्तन किया गया। १४ दिसम्बर को गीता पाठ तथा विश्व-शान्ति हेतु प्रार्थना सहित गीता जयन्ती मनायी गयी।

नुआगाओं (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक प्रार्थना, शनिवारों को साप्ताहिक सत्संग तथा गुरुवारों का चल सत्संग किये जाते रहे। ७ से १३ नवम्बर तक श्रीमद्भागवत सप्ताह आयोजित किया गया तथा ३ से ५ दिसम्बर तक श्रीमद्भागवत कथा की गयी। समापन पर सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया।

पुरी (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग तथा गुरुवारों और सोमवारों को साप्ताहिक सत्संग चलते रहे। प्रत्येक ८ और २४ को पादुका पूजा, संक्रान्ति दिनों को हनुमान चालीसा पाठ तथा एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पाठ और गीता पाठ किया जाता रहा। ७ दिसम्बर को शाखा का स्थापना दिवस पादुका पूजा, महामन्त्र संकीर्तन और नारायण सेवा सहित मनाया गया।

बरगढ़ (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, सोमवारों को रुद्राभिषेक, गुरुवारों को गुरु पादुका पूजा, शनिवारों को साप्ताहिक सत्संग चलते रहे तथा निर्धन रोगियों की होमियोपैथी चिकित्सा सेवा की जाती रही। इसके अतिरिक्त शाखा द्वारा 'दृक्-दृश्य-विवेक' विषय पर विशेष प्रवचन तथा १ से ७ दिसम्बर तक भागवत सप्ताह भी आयोजित किया गया।

बीकानेर (राजस्थान): श्री स्वामी चितनिष्ठानन्द माता जी के निर्देशन में शाखा की नियमित गतिविधियाँ यथा शाखा में प्रतिदिन योगासन कक्षाएँ, शनिवारों को हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड पारायण इत्यादि पूर्ववत् चलती रहीं। २४ नवम्बर से २४ दिसम्बर तक विश्व-शान्ति महायज्ञ, ३ दिसम्बर को महामन्त्र जप, २५ दिसम्बर को श्री रामचरितमानस पाठ और २६ को प्रवचन आयोजित किये गये। इसके साथ-साथ शाखा द्वारा जरूरतमन्द निर्धनों को अन्न और वस्त्र भी वितरित किये गये।

भीमकाण्ड (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पादुका पूजा और रविवारों को साप्ताहिक सत्संग किये जाते रहे। १४ दिसम्बर को गीता पाठ, पादुका पूजा, हवन और भजन-कीर्तन सहित गीता जयन्ती मनायी गयी।

राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा पादुका पूजा, भजन-कीर्तन, अर्चना और विष्णुसहस्रनाम सहित गुरुवारों और रविवारों को सत्संग इत्यादि के कार्यक्रम चलते रहे। निःशुल्क ऐक्यूप्रेशर और जरूरतमन्द लोगों का औषधियों सहित उपचार किया जाता रहा। १४ दिसम्बर को गीता जयन्ती दिवस मनाया गया।

राजा पार्क शाखा, जयपुर (राजस्थान): नवम्बर २०२१ में शाखा की आध्यात्मिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, जल सेवा सम्बन्धी और विधवाओं की आर्थिक सहायता इत्यादि सम्बन्धी समस्त गतिविधियाँ यथावत् चलती रहीं। इस मास में स्वामी शिवानन्द होमियोपैथी चिकित्सालय के माध्यम से लगभग १८० रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गयी। विशेष कार्यक्रमों में : ४ नवम्बर को दीपावली उत्सव और ५ को अन्नकूट का उत्सव धूमधाम सहित मनाया गया, १५ से १९ नवम्बर तक दीपदान का उत्सव भक्तों द्वारा दीपदान तथा १९ को विधिवत् समापन सहित मनाया गया, इसी दिन कार्तिक मास में प्रारम्भ किये गये अखण्ड रामायण पाठ का भी समापन किया गया।

लखनऊ (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा ५ और १२ दिसम्बर को लेखराज होम में प्रार्थना, भजन, मन्त्र जप और स्वाध्याय इत्यादि सहित सत्संग किये गये। इसके अतिरिक्त कोविड महामारी के रोगियों के शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ और विश्व-शान्ति हेतु महामृत्युञ्जय मन्त्र जप नियमित रूप से चलता रहा।

साउथ बलांडा (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, प्रत्येक शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ एवं २४ को पादुका पूजा आदि की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। गीता पाठ, विष्णुसहस्रनाम पाठ और हनुमान चालीसा पाठ एकादशियों को किया जाता रहा। ३ दिसम्बर को महामन्त्र संकीर्तन और १५ को विशेष सत्संग आयोजित किया गया।

स्टील टाउनशिप, राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा गुरुवारों को पादुका पूजा, रविवारों को साप्ताहिक सत्संग, सोमवारों को योग एवं संगीत की निःशुल्क कक्षाएँ पूर्ववत् चलती रहीं। २५ को विशेष सत्संग तथा २६ को साधना दिवस मनाया गया।

हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की नवीनतम सूची

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कृत

अच्छी नींद कैसे सोयें . . . . . ₹ ७०/-
अध्यात्मविद्या १४०/-
कर्म और रोग २५/-
कर्मयोग-साधना. १३०/-
गीता-प्रबोधिनी ५५/-
गुरु-तत्त्व ५५/-
घरेलू चिकित्सा १९०/-
जपयोग १२०/-
जीवन में सफलता के रहस्य १८५/-
ज्योति, शक्ति और प्रज्ञा. ४०/-
दिव्योपदेश ३५/-
देवी माहात्म्य ११५/-
धनवान् कैसे बनें ५०/-
धारणा और ध्यान २१०/-
ध्यानयोग १३०/-
प्राणायाम-साधना. ७५/-
बालकों के लिए दिव्य जीवन सन्देश. . . .१००/-
ब्रह्मचर्य-साधना. ११०/-
भगवान् शिव और उनकी आराधना. . . १५०/-
भगवान् श्रीकृष्ण. १३०/-
मन : रहस्य और निग्रह २०५/-
मरणोत्तर जीवन और पुनर्जन्म. १३५/-
मानसिक शक्ति. १३०/-
मूर्तिपूजा का दर्शन और महत्त्व. ३०/-
मैं इसका उत्तर दूँ? १३०/-
श्रीमद्भगवद्गीता ४२५/-
योगाभ्यास का मूलाधार १८५/-
योगवासिष्ठ की कथाएँ ९०/-
योगासन. ११५/-
विद्यार्थी-जीवन में सफलता. ६०/-
शिवानन्द-आत्मकथा . . . . . ₹ १२०/-
सत्संग भजन माला १६०/-
सत्संग और स्वाध्याय ६०/-
सद्गुणों का अर्जन एवं दुर्गुणों का
नाश किस प्रकार करें १९५/-
सन्त-चरित्र २३५/-
सौ वर्ष कैसे जियें ९५/-
साधना ३२०/-
स्वरयोग. ८०/-
हठयोग १००/-
हिन्दूतत्त्व-विवेचन १६०/-

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज कृत

अध्यात्म-प्रसून ३५/-
आलोक-पुंज १०५/-
ज्योति-पथ की ओर १०५/-
त्याग : शरणागति. २५/-
भगवान् का मातृरूप ७०/-
मोक्ष सम्भव है! २५/-
योग-सन्दर्शिका ५५/-
शाश्वत सन्देश ५५/-
शोकातीत पथ १४०/-
साधना सार. ३५/-

अन्य लेखक कृत

एकादशोपनिषदः (मूल मन्त्राः) १४०/-
गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन ५०/-
*चिदानन्दम् २००/-
जीवन-स्रोत १५०/-
शारीरकमीमांसादर्शनम् १५/-
शिव स्तोत्र माला ३५/-
श्रीमद्भगवद्गीता (मूलमात्रम्). १००/-
*सर्वस्नेही हृदय १००/-
दिव्य योगा ९०/-

५०% अग्रिम। पैकिंग अतिरिक्त । विस्तृत जानकारी के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पत्रालय : शिवानन्दनगर—२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

फोन : ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail : bookstore@sivanandaonline.org

For online orders and Catalogue : dlsbooks.org

NEW EDITION

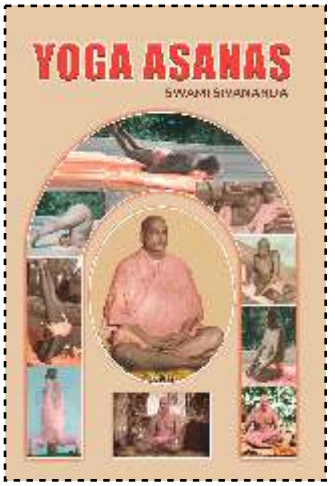

YOGA ASANAS

Pages: 192 **Price: ₹ 160/-**

Twenty Second Edition: 2022

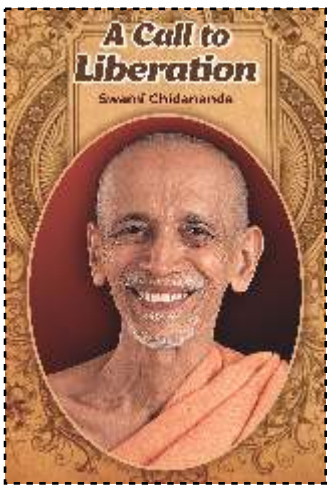

A CALL TO LIBERATION

Pages: 512 **Price: ₹ 390/-**

Third Edition: 2022

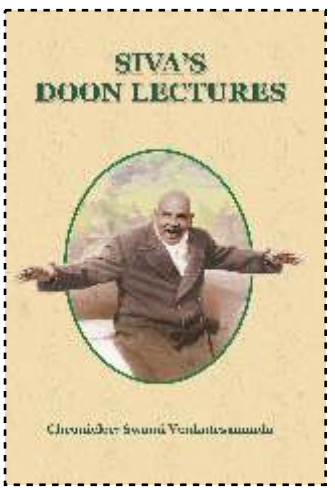

SIVA'S DOON LECTURES

Pages: 272 **Price: ₹ 170/-**

Second Edition: 2022

(आवरणपृष्ठ २ का शेष)

२१	बुध	एकादशी
२३	शुक्र	प्रदोष पूजा
२५	रवि	अमावास्या; महालय (पितृपक्ष) समाप्ति
२६	सोम	श्री नवरात्र पूजा प्रारम्भ

अक्तूबर

२	रवि	सरस्वती आवाहन; गान्धी जयन्ती
३	सोम	श्री दुर्गा अष्टमी; श्री महा नवमी; श्री नवरात्र पूजा समापन
४	मङ्गल	विजयादशमी
६	बृहस्पति	एकादशी
७	शुक्र	प्रदोष पूजा
९	रवि	पूर्णिमा; महर्षि वाल्मीकि जयन्ती
१८	मङ्गल	श्री राधा जयन्ती
२१	शुक्र	एकादशी
२२	शनि	प्रदोष पूजा
२३	रवि	नरक चतुर्दशी
२४	सोम	दीपावली; अमावास्या
२५	मङ्गल	अमावास्या; सूर्यग्रहण अपराह्न ४.२६ से ५.३७
२६	बुध	गोवर्धन पूजा; श्री गो पूजा; श्री बलि पूजा
३०	रवि	श्री स्कन्द षष्ठी

नवम्बर

१	मङ्गल	गोपाष्टमी; परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज का इक्कीसवाँ पुण्य-तिथि आराधना दिवस
४	शुक्र	एकादशी
५	शनि	श्री तुलसी पूजा; प्रदोष पूजा; चातुर्मास्य व्रत समापन
७	सोम	वैकुण्ठ चतुर्दशी
७/८	सोम/मङ्गल	पूर्णिमा
८	मङ्गल	कार्तिक पूर्णिमा; श्री गुरु नानक जयन्ती; चन्द्रग्रहण अपराह्न ५.१० से ६.१९
२०	रवि	एकादशी
२१	सोम	प्रदोष पूजा
२३	बुध	अमावास्या

दिसम्बर

३	शनि	शिवानन्द आश्रम में चल रहे अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ की उन्नासीवीं जयन्ती
४	रवि	एकादशी; श्री गीता जयन्ती
५	सोम	प्रदोष पूजा
७	बुध	श्री दत्तात्रेय जयन्ती; पूर्णिमा
८	बृहस्पति	पूर्णिमा
१९	सोम	एकादशी
२१	बुध	प्रदोष पूजा
२३	शुक्र	अमावास्या
२४	शनि	क्रिसमस-पूर्व-सन्ध्या
२५	रवि	क्रिसमस दिवस
३१	शनि	श्री विश्वनाथ मन्दिर (शिवानन्द आश्रम) की उन्नासीवीं प्रतिष्ठा महोत्सव जयन्ती

२०२३

जनवरी

२	सोम	एकादशी
४	बुध	प्रदोष पूजा
६	शुक्र	पूर्णिमा
१५	रवि	मकर संक्रान्ति (उत्तरायण पुण्यकाल पूर्वाह्न ३.०१)
१८	बुध	एकादशी
१९	बृहस्पति	प्रदोष पूजा
२१	शनि	अमावास्या
२६	बृहस्पति	गणतन्त्र दिवस; श्री वसन्त पंचमी
२८	शनि	रथ सप्तमी
२९	रवि	भीष्म अष्टमी

फरवरी

१	बुध	एकादशी
२	बृहस्पति	प्रदोष पूजा
५	रवि	पूर्णिमा
१६	बृहस्पति	एकादशी
१८	शनि	प्रदोष पूजा; श्री महाशिवरात्रि
२०	सोम	सोमवती अमावास्या

मार्च

३	शुक्र	एकादशी
४	शनि	प्रदोष पूजा
७	मङ्गल	पूर्णिमा; श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती
८	बुध	होली
१७	शुक्र	एकादशी
१९	रवि	प्रदोष पूजा
२१	मङ्गल	अमावास्या

नोट : जहाँ दो अँगरेजी दिनांकों के साथ किसी तिथि/पर्व का उल्लेख हो, वहाँ यह समझना चाहिए कि उस तिथि/पर्व की अवधि प्रथम अँगरेजी दिनांक की सन्ध्या से प्रारम्भ हो कर द्वितीय अँगरेजी दिनांक के प्रातःकाल में समाप्त होगी।

Registrar of Newspapers for India
No. 71610/1999

Postal-Registration No. TRI/005/2021-23

फरवरी २०२२

LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
(Licence No. WPP No. 02/21-23, Valid upto: 31-12-2023)
DATE OF PUBLICATION: 20th OF EVERY MONTH
DATE OF POSTING: 20th OF EVERY MONTH
Posted at Shivanandanagar, Tehri-Garhwal, Uttarakhand

ईश्वर का सगुण और निर्गुण रूप

उपनिषदों ने जिसे ब्रह्म कहा और स्मृतियों ने जिसे परमात्मा कहा, उसे भागवत में भगवान् कहा गया है।

मेरे प्रभु शिव, जिनका हृदय हरि है, उस औपनिषदिक निर्गुण ब्रह्म से अभिन्न हैं।

जिस प्रकार वायु आकार रहित है, किन्तु वह चक्रवात का रूप धारण कर लेता है; उसी प्रकार निराकार ब्रह्म भी साकार बन सकता है।

ईश्वर अपने भक्तों के लिए बर्फ के समान साकार हो सकता है और ज्ञानियों के लिए वाष्प की भाँति निराकार भी हो सकता है।

पानी जिस प्रकार उदजन (Hydrogen) और प्राणवायु (Oxygen) के रूप में निराकार भी रह सकता है और बर्फ के रूप में साकार भी रह सकता है, उसी प्रकार ब्रह्म भी साकार और निराकार दोनों रूपों में रहता है। अवतार ग्रहण करने के लिए, वह कोई भी रूप धारण कर सकते हैं।

व्यष्टि पिण्ड है और समष्टि ब्रह्माण्ड है। समष्टि का अर्थ है—सामूहिक रूप और व्यष्टि का अर्थ है—अलग-अलग व्यक्ति। वृक्ष व्यष्टि है, जब कि उपवन समष्टि है। दियासलाई की एक सलाई व्यष्टि है, तो दियासलाई की डिबिया समष्टि है। सारे व्यष्टि कारण शरीरों में जो एक-रूप है, वही ईश्वर है। समस्त व्यष्टि सूक्ष्म शरीरों में जो एक-समान है, उसे हिरण्यगर्भ अथवा 'सूत्रात्मा' कहते हैं। व्यष्टिगत सूक्ष्म शरीर से जो तादात्म्य रूप है, वह तैजस कहलाता है। समूचे व्यष्टि स्थूल शरीरों के साथ जो एक-रूप है, उसे विराट् अथवा वैश्वानर कहते हैं। व्यष्टिगत स्थूल शरीर से जो एकरूप है, उसे विश्व कहते हैं। स्वयं ईश्वर ही सत्त्व, रजस् और तमस् गुणों के द्वारा ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र रूप धारण कर लेता है तथा विश्व का स्रष्टा, संरक्षक और संहारक बनता है। ब्रह्मा विराट् में, विष्णु हिरण्यगर्भ में और रुद्र ईश्वर में समाहित हैं।

स्वामी शिवानन्द

सेवा में

'द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी' की ओर से स्वामी अद्वैतानन्द द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से मुद्रित तथा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्य कार्यालय, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से प्रकाशित। फोन : ०१३५-२४३००४०, २४३११९०
E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org ; Website : www.sivanandaonline.org ; www.dlshq.org
सम्पादक : स्वामी निर्लिप्तानन्द